قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِىْ ۚ
قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّىْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهْلَ قَرْيَةِ ۣاسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا
فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِىْ
وَ بَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ
فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَ كَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَ اَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ
مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَاۤ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّ كُفْرًا ﴿٨٠﴾ ۚ فَاَرَدْنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّ اَقْرَبَ
رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَ اَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَ كَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَ كَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ
فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَ يَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖۗ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَ مَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا
لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ؕ ﴿٨٢﴾

आयत न० 75 से 82

उन बुज़ुर्ग ने कहा कि क्या मैंने आप से नहीं कहा था कि आप से मेरे साथ सब्र न हो सकेगा(75) मूसा (अलैहिस्सलाम) **ने कहा** (अच्छा इस बार रहने दीजिए) **अगर इस बार के बाद मैं आप से किसी बात के बारे में पूछूं तो आप मुझ को अपने साथ न रखिये, बेशक आप मेरी तरफ़ से मजबूरी** (की हद) **को पहुंच चुके हैं** (इस बार मूसा अलैहिस्सलाम ने भूल की मजबूरी नहीं बताई इससे पता चलता है कि यह सवाल उन्होंने जान बूझ कर पैग़म्बर की हैसियत से किया था)(76) **फिर दोनो** (आगे) **चले यहां तक कि जब एक गांव वालों के पास पहुंचे तो गांव वालों से खाने को मांगा** (कि हम महमान हैं) **तो उन्होंने उन की महमानी करने से इनकार कर दिया इतने में उन को वहां एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी तो उन बुज़ुर्ग ने उसको** (हाथ के इशारे से करामत से) **सीधा कर दिया, मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि अगर आप चाहते तो इस** (काम) **पर महनताना ही लेलेते** (कि इस वक़्त काम भी चलता और उनकी आदत का सुधार भी होता)(77) **उन बुज़ुर्ग ने कहा यह वक़्त हमारे और आप के अलग होने का है** (जैसा कि आपने ख़ुद शर्त की थी) **अब मैं उन चीज़ों की असलीयत बताए देता हूं जिन पर आप से सब्र न हो सका** (जैसा कि अगली आयतों में इस का बयान आता है)(78) **वो जो कशती थी तो कुछ ग़रीब आदमियों की थी जो** (उससे) **दरिया में महनत मज़दूरी करते थे** (उसी पर उनकी गुज़र बसर थी)

सो मैंने चाहा उसमें ऐब डाल दूं और (वजह इसकी यह थी कि) **उन लोगों से आगे की तरफ़ एक** (ज़ालिम) **बादशाह था जो हर** (अच्छी) **कशती को ज़बरदस्ती छीन लेता था** (अगर मैं कशती में ऐब डाल कर देखने में बेकार न कर देता तो यह कशती भी छीन ली जाती और उन ग़रीबों की मज़दूरी का सहारा भी ख़त्म हो जाता इसलिए तोड़ने में ही भलाई थी)(79) **और रहा वो लड़का सो उसके मां बाप ईमानदार थे** (और अगर वो बड़ा होता तो काफ़िर ज़ालिम होता और मां को उससे मुहब्बत बहुत थी) **सो हम को ख़तरा हुआ कि यह उन दोनों पर सरकशी और कुफ़्र का असर न डाल दे** (यानी बेटे की मुहब्बत की वजह से वो भी बेदीनी में उसका साथ न देने लगें)(80) **बस हमने चाहा कि** (इस का तो काम तमाम कर दिया जाए फिर) **इसके बदले उन का रब उनको ऐसी औलाद दे जो कि पाकीज़गी** (यानी दीन) **में इससे बेहतर हो और** (मां बाप के साथ) **मुहब्बत करने में इससे बढ़ कर हो**(81) **और रही दीवार सो वो दो यतीम लड़कों की थी जो इस शहर में** (रहते) **हैं और उस दीवार के नीचे उनका कुछ माल दबा हुआ था** (जो उनके बाप से मीरास में उन को पहुंचा है) **और उन का बाप** (जो मर गया है वो) **एक नेक आदमी था** (उसके नेक होने की बरकत से अल्लाह त़ाला ने उस की औलाद के माल को बचाए रखना चाहा, अगर दीवार अभी गिर जाती तो लोग यह माल लूट ले जाते)**, इसलिए आप के रब ने अपनी महरबानी से चाहा कि वो दोनों अपनी जवानी** (की उम्र) **को पहुंच जाएं और दबा हुआ माल निकाल लें और** (ये सारे काम मैंने अल्लाह के हुक्म से किये हैं उनमें से) **कोई काम मैंने अपनी राय से नहीं किया, यह है असलीयत उन बातों को जिन पर आप से सब्र न हो सका** (जिस को मैं वादे के हिसाब से बता चुका हूं बस हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से विदा हो गये)(82)।

नोटः- लिखा है कि उस क़त्ल होने वाले लड़के के मां बाप को अल्लाह तआ़ला ने उसके बदले में नेक औलाद दी जिससे एक नबी पैदा हुए और उस नबी के वास्ते से अल्लाह तआ़ला ने एक बड़ी उम्मत को हिदायत दी।

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِی الْقَرْنَیْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَیْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿۸۳﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِی الْاَرْضِ وَ اٰتَیْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ
سَبَبًا ﴿۸۴﴾ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۸۵﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِیْ عَیْنٍ حَمِئَةٍ وَّ وَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ۬
قُلْنَا یٰذَا الْقَرْنَیْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَ اِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِیْهِمْ حُسْنًا ﴿۸۶﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ یُرَدُّ

إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا
يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن دُونِهَا
سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

आयत न० 83 से 91

नोटः- एक सवाल लोगों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी के इम्तिहान के लिए जुलक़रनैन बादशाह के बारे में किया था जिसके बारे में अगली आयतों में बयान हैः-

और (लोग) **आप से ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि मैं उसके बारे में अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूं**(83) (आगे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसका क़िस्सा शुरू हुआ कि ज़ुलक़रनैन एक ऐसे ज़बरदस्त बादशाह हुए हैं कि) **हमने उनको रूए ज़मीन पर हुकूमत दी थी और हमने उनको हर क़िस्म का सामान** (काफ़ी) **दिया था** (जिससे वो अपने बादशाहत के कामों को पूरा कर सकें)(84) **बस वो** (मुल्क जीतने के इरादे से पच्छिम की तरफ़) **एक राह पर हो लिये** (और सफ़र करना शुरू किया)(85) **यहां तक कि जब** (सफ़र करते करते बीच के शहरों को जीतते हुए) **सूरज छुपने की जगह** (यानी पच्छिम की तरफ़ आबादी के आख़ीर) **पर पहुंचे तो सूरज उनको एक काले पानी में डूबता हुआ दिखाई दिया** (यानी कि समन्दर कि उसका पानी बहुत जगह काला दिखाई देता है और समन्दर से आगे नज़र नहीं जाती इसलिए ऐसा ही लगता है) **और उस जगह पर उन्होंने एक क़ौम देखी** (जो काफ़िर थे)**, हमने** (इलहाम से या उस ज़माने के पैग़म्बर के वास्ते से) **यह कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन** (उस क़ौम के बारे में तुम्हारे पास दो रास्ते हैं) **चाहे** (उनके ज़ुल्म व फ़साद की वजह से उनको शुरू ही से) **सज़ा दो चाहे उन के बारे में नर्मी का बरताव करो** (यानी उन को समझाओ न मानें तो फिर सज़ा दो)(86) **ज़ुलक़रनैन ने कहा कि** (मैं पहले उन को ईमान की दावत दूंगा लेकिन इसके बाद भी) **जो ज़ालिम** (यानी काफ़िर) **रहेगा तो उस को तो हम लोग सज़ा देंगे** (और यह सज़ा तो दुनिया में होगी) **फिर वो** (मरने के बाद) **अपने सच्चे मालिक के पास पहुंचा दिया जाएगा फिर वो उसको** (दोज़ख़ की) **सख़्त सज़ा देगा**(87) **और जो आदमी** (ईमान की दावत के बाद) **ईमान ले आएगा और नेक काम करेगा तो उसके लिए** (आख़रत में भी) **बदले में भलाई मिलेगी और हम भी** (दुनिया में) **अपने बरताव में उस को आसान** (और नर्म) **बात कहेंगे** (यानी उन पर कोई सख़्ती तो क्या की जाती ज़बान से भी

सख़्त बात नहीं की जाएगी)(88) **फिर** (पच्छिम के मुल्क जीतने के बाद पूरब के मुल्क जीतने के इरादे से पूरब की तरफ़) **एक राह पर चले**(89) **यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पर** (यानी पूरब की तरफ़ आबादी के आख़ीर पर) **पहुंचे तो सूरज को एक ऐसी क़ौम पर निकलते हुए देखा जिनके लिए हमने** (धूप से) **बचने के लिए कोई आड़ नहीं रक्खी थी** (यानी उस जगह एक ऐसी क़ौम आबाद थी जो धूप से बचने के लिए कोई मकान या तम्बू बनाने के आदी न थे बल्कि शायद कपड़े भी न पहनते हों जानवरों की तरह खुले मैदान में रहते थे)(90) **यह क़िस्सा इसी तरह है, और ज़ुलक़रनैन के पास जो कुछ** (सामान) **था हम को उस की पूरी ख़बर है** (इसमें पैग़म्बरी के इम्तिहान के लिए ज़ुलक़रनैन के बारे में सवाल करने वालों को नसीहत है कि हम जो कुछ बता रहे हैं वो इल्म व ख़बर की बुनियाद पर है कहानियों की तरह नहीं ताकि पैग़म्बर की सच्चाई को जान लें)(91)।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۹۲﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿۹۳﴾ قَالُوْا يٰذَا
الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَ مَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَهُمْ
سَدًّا ﴿۹۴﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿۹۵﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى
اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْۤ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿۹۶﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ
يَّظْهَرُوْهُ وَ مَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿۹۷﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَ كَانَ وَعْدُ
رَبِّىْ حَقًّا ﴿۹۸﴾

आयत न० 92 से 98

फिर (पूरब व पच्छिम जीतने के बाद) **एक और राह पर चले** (क़ुरआन में तो नहीं बताया मगर ज़्यादा उम्मीद है कि उत्तर की तरफ़)(92) **यहां तक कि जब ऐसी जगह पर पहुंचे जो दो पहाड़ों के बीच में थी तो उन पहाड़ों से इस तरफ़ एक क़ौम को देखा जो** (अनपढ़ और जानवरों की सी ज़िन्दगी की वजह से) **कोई बात समझने के पास भी नहीं पहुंचते थे**(93) **उन्होंने** (किसी वास्ते से) **कहा ऐ ज़ुलक़रनैन क़ौम याजूज व माजूज** (जो इस घाटी के उस तरफ़ रहते हैं हमारी) **इस ज़मीन में** (कभी-कभी आकर) **बड़ा फ़साद करते हैं** (यानी ख़ून ख़राबा करते हैं और हम में उनके मुक़ाबिले की ताक़त नहीं) **सो क्या हम लोग आप के लिए चन्दा करके कुछ माल**

जमा कर दें इस शर्त पर कि आप हमारे और उनके बीच कोई दीवार बनादें (कि वो इस तरफ़ न आने पाएं)(94) **ज़ुलक़रनैन ने जवाब दिया कि जिस माल में मेरे रब ने मुझ को** (ख़र्च करने का) **हक़ दिया है वो बहुत कुछ है** (इसलिए चन्दा जमा करने और माल देने की तो ज़रूरत नहीं लेकिन) **हाथ पैर की ताक़त** (यानी मेहनत मज़दूरी) **से मेरी मदद करो तो मैं तुम्हारे और उनके बीच एक मज़बूत दीवार बना दूंगा**(95) (अच्छा तो) **तुम लोग मेरे पास लोहे की चादरें लाओ** (क़ीमत हम देंगे, सब सामान जमा हो जाने पर दोनो पहाड़ों के बीच लोहे की दीवार बनाने का काम शुरू कर किया गया), **यहां तक कि जब** (उस दीवार के रद्दे मिलाते-मिलाते) **उन** (दोनों पहाड़ों) **के दोनों सिरों के बीच** (की जगह) **को** (पहाड़ों के) **बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि आग दहकाओ,** (आग दहकाना शुरू हो गया) **यहां तक कि जब** (आग दहकाते-दहकाते) **उस को लाल अंगारा कर दिया तो हुक्म दिया कि अब मेरे पास पिघला हुआ तांबा लाओ** (जो पहले से तैयार कर लिया होगा) **कि उस पर डाल दूं** (बस यह पिघला हुआ तांबा लाया गया और मशीनों से ऊपर से छोड़ दिया गया कि दीवार की ख़ाली जगहों को भर दिया गया उस दीलवार की लम्बाई चौड़ाई अल्लाह को पता है)(96) **तो** (इस दीवार की ऊंचाई और चिकनाहट की वजह से) **न तो याजूज माजूज उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें** (मज़बूती की वजह से) **कोई छेद कर सकते थे**(97) **ज़ुलक़रनैन ने** (जब उस दीवार को तैयार देखा जिस का तैयार होना कोई आसान काम न था तो शुक्र करते हुए) **कहा कि यह मेरे रब की रहमत है** (मुझ पर भी कि मेरे हाथों यह काम हो गया और उस क़ौम के लिए भी जिन को याजूज माजूज सताते थे) **फिर जिस वक़्त मेरे रब का वादा आएगा** (यानी इसके फ़ना होने का वक़्त आएगा) **तो इसको गिरा कर** (ज़मीन के) **बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा** (है और अपने वक़्त पर ज़रूर होकर रहता) **है**(98)।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ
لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

आयत न० 99 से 101

और (जब उस दीवार के गिरने का दिन आएगा और याजूज माजूज निकलेंगे तो) **उस दिन हम उन की यह हालत कर देंगे कि एक दूसरे से टकराएंगे** (क्योंकि बहुत ज़्यादा होंगे और एक साथ निकल पड़ेंगे और सब एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहेंगे) **और** (यह क़ियामत के नज़दीक ज़माने में होगा

फिर कुछ दिनों बाद क़ियामत का सामान शुरू होगा एक बार पहले सूर फूंका जाएगा जिससे पूरी दुनिया फ़ना हो जाएगी फिर) **सूर** (दोबारा) **फूंका जाएगा** (जिससे सब ज़िन्दा हो जाएंगे) **फिर हम सब को एक एक करके** (हश्र के मैदान में) **जम कर लेंगे(99) और दोज़ख़ को उस दिन काफ़िरों के सामने कर देंगे(100) जिन की आंखों पर** (दुनिया में) **हमारी याद से** (यानी सच्चे दीन के देखने से) **पर्दा पड़ा हुआ था और** (जिस तरह ये हक़ को देखते न थे उसी तरह उस को) **वो सुन भी न सकते** (थे यानी सच्चाई जानने के देखने और सुनने के सब रास्ते बन्द कर रक्खे) **थे(101)।**

नोटः- याजूज माजूज एक क़ौम है जो आम इन्सानों की तरह हैं ताक़तवर और जंगजू हैं। गिनती में बहुत ज़्यादा हैं हज़रत ज़ुलक़रनैन की बनाई हुई दीवार से दूसरी तरफ़ आबाद हैं जहां अभी तक इन्सानों की पहुंच नहीं है। क़ियामत के नज़दीक ज़माने में उस दीवार को तोड़ कर इधर आजाएंगे और बहुत ख़ून ख़राबा करेंगे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ से वो सब मर जाएंगे। उनकी लाशों से ज़मीन में बदबू फैल जाएगी। फिर ऐसी बारिश होगी कि वो लाशें बहकर समन्दर में चली जाएंगी और दुनिया में अमन हो जाएगा।

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾ قُلْ هَلْ
نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ
صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾
ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ
اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

आयत न० 102 से 110

क्या फिर भी ये काफ़िर समझते हैं कि मुझ को छोड़ कर मेरे (ही) **बन्दों को अपना कारसाज़** (यानी माबूद और ज़रूरत पूरी करने वाला) **बनालें** (जो शिर्क और खुला कुफ़्र है)**, बेशक**

हमने काफ़िरों की दावत के लिए दोज़ख़ को तैयार कर रक्खा (है दावत ज़लील करने के लिए कहा) **है(102)** (और अगर उन को अपने कामों पर घमन्ड हो जिन को वो नेकी समझते हों और इस वजह से अपने को सज़ा से बरी समझते हों तो) **आप** (उनसे) **कह दीजिए कि क्या हम तुम को ऐसे लोग बताएं जो अपने कामों में बिल्कुल नाकाम हैं(103) ये वो लोग हैं जिनकी दुनिया में करी कराई मेहनत** (जो नेक कामों में की थी) **सब बर्बाद हो गई और वो** (जहालत की वजह से) **ये ही समझते रहे कि वो अच्छा काम कर रहे हैं(104) ये वो लोग हैं जो अपने रब की आयतों का और उससे मिलने का** (यानी क़ियामत का) **इनकार कर रहे हैं सो** (इसलिए) **उनके सारे** (नेक) **काम बर्बाद हो गये तो क़ियामत के दिन हम उन** (के नेक कामों) **को बिल्कुल न तोलेंगे(105)** (बल्कि) **उन की सज़ा वो ही होगी** (जो ऊपर बताई गई) **यानी दोज़ख़ इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र किया था और** (उस कुफ़्र का एक हिस्सा यह भी था कि) **मेरी आयतों और पैग़म्बरों का मज़ाक़ बनाया था(106)** (आगे उनके मुक़ाबिले में ईमान वालों का हाल बयान करते हैं कि) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन की महमानी के लिए फ़िरदौस** (यानी जन्नत) **के बाग़ होंगे(107) जिनमें वो सदा रहेंगे** (न उन को कोई निकालेगा) **और न वो वहां से कहीं और जाना चाहेंगे(108)** (ऐ पैग़म्बर) **आप लोगों से कह दीजिए कि अगर मेरे रब की बातें** (यानी अल्लाह तआ़ला की ख़ूबियां) **लिखने के लिए समन्दर** (का पानी) **रोशनाई** (की जगह) **हो** (और उससे लिखना शुरू करे) **तो मेरे रब की बातें ख़त्म होने से पहले समन्दर ख़त्म हो जाएगा** (और सब बातें न लिखी जा सकेंगी) **चाहे उस समन्दर** (की कमी पूरी करने के लिए) **हम वैसा ही एक दूसरा समन्दर** (उसकी) **मदद के लिए ले आएं** (तब भी वो बातें ख़त्म न हों और दूसरा समन्दर भी ख़त्म हो जाए)**(109) आप** (इन लोगों से यह भी) **कह दीजिए कि मैं तुम सब की तरह इन्सान हूं** (न ख़ुदाई का दावा करता हूं न फ़रिशता होने का हां) **मेरे पास** (अल्लाह की तरफ़ से) **वही आती है** (और) **तुम्हारा सच्चा माबूद एक ही माबूद है, तो जो आदमी अपने रब से मिलने की उम्मीद रक्खे** (और उसका प्यारा बनना चाहे) **तो** (मुझको पैग़म्बर मान कर मेरी शरीअत के हिसाब से) **नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को साझी न करे(110)।**

नोटः- लोगों को दिखाने की नीयत से नेक काम करना भी छुपा शिर्क यानी रिया है जिससे बचने की हदीसों में बहुत ताकीद आई है।

19-सूरत-मरयम

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '98' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝١ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝٢ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝٣ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ
مِنِّيْ وَ اشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّ لَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝٤ وَ اِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَ كَانَتِ
امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝٥ يَّرِثُنِيْ وَ يَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَ اجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝٦ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا
نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّ كَانَتِ امْرَاَتِيْ
عَاقِرًا وَّ قَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّ قَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَ لَمْ تَكُ
شَيْئًا ۝٩ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ
الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّ عَشِيًّا ۝١١ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَ اٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢ وَّ حَنَانًا
مِّنْ لَّدُنَّا وَ زَكٰوةً ؕ وَ كَانَ تَقِيًّا ۝١٣ وَّ بَرًّاۢ بِوَالِدَيْهِ وَ لَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝١٤ وَ سَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَ يَوْمَ
يَمُوْتُ وَ يَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥

आयत न० 01 से 15

काफ़ हा या ऐन साद (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)**(01) यह** (जो क़िस्सा आगे आता है) **ज़िक्र है आप के रब की उस रहमत का जो उसने अपने** (पसन्दीदा) **बन्दे** (हज़रत) **ज़िकरिया** (अलैहिस्सलाम के हाल) **पर की थी(02)** (यह उस वक़्त की बात है) **जब कि उन्होंने अपने रब को आहिस्ता** (आवाज़) **से पुकारा(03)** (और) **कहा कि या रब मेरे मेरी हड्डियां** (बुढ़ापे की वजह से) **कमज़ोर हो गईं और** (मेरे) **सर में बालों की सफ़ेदी फैल गई** (यानी सभी बाल सफ़ेद हो गये तो चाहिए तो यह कि मैं इस हालत में औलाद की दुआ न करूं मगर चूंकि आप की क़ुदरत व रहमत बड़ी है) **और** (मैं उस क़ुदरत व रहमत को सदा देखता रहा हूं और इसके पहले कभी) **आप से**

(कोई चीज़) **मांगने में या रब मेरे नाकाम नहीं रहा हूं** (इसलिए इस दुआ की हिम्मत हो गई है)(04) **और मुझे अपने** (मरने के बाद) **बाद** (अपने) **रिशतेदारों** (की तरफ़) **से** (यह) **ख़तरा है** (कि मेरी मर्ज़ी के हिसाब से शरीअत और दीन की ख़िदमत न कर पाएंगे इसलिए ऐसी औलाद की चाहत है जो दीन की ख़िदमत करे) **और** (चूंकि मेरे बुढ़ापे के साथ) **मेरी बीवी** (भी) **बांझ है** (जिसके कभी औलाद ही नहीं हुई) **सो** (ऐसी सूरत में) **आप मुझको ख़ास अपने पास से एक ऐसा वारिस** (यानी बेटा) **दे दीजिए(05) कि जो** (मेरे ख़ास इल्मों में) **मेरा वारिस बने और** (मेरे बाप दादा) **याक़ूब** (अलैहिस्सलाम) **के ख़ानदान** (के इल्मों की विरासत में उन) **का** (भी) **वारिस बने और या रब मेरे उस को** (अपना) **पसन्दीदा** (व मक़बूल बनाइये यानी जो नेक हो ऐसा आलिम) **बनाइये(06)** (अल्लाह तआ़ला ने फ़रिशतों के वास्ते से कहा कि) **ऐ ज़िकरिया हम तुम को एक बेटे की ख़ुशख़बरी देते हैं जिस का नाम याहया होगा कि उसके पहले** (ख़ास बातों में) **हम ने किसी को उस जैसा न बनाया होगा** (यानी जिस इल्म व अमल की तुम दुआ करते हो वो तो ज़रूर ही देंगे और कुछ और ख़ूबियां भी दी जाएंगी)(07) **ज़िकरिया** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि या मेरे रब मेरे औलाद किस तरह होगी जब कि मेरी बीवी बांझ है और मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूं** (बस पता नहीं कि हम जवान हो जाएंगे या मुझ को दूसरा निकाह करना होगा या इसी हालत में औलाद होगी)(08) **कहा गया कि** (यह) **हालत ऐसी ही रहेगी** (और फिर औलाद होगी ऐ ज़िकरिया) **तुम्हारे रब का बयान है कि यह** (बात) **मुझको आसान है और** (यह क्या इससे बड़ा काम कर चुका हूं जैसे) **मैंने तुम को** (ही) **पैदा किया है जब कि** (पैदा होने से पहले) **तुम कुछ भी न थे(09) ज़िकरिया** (अलैहिस्सलाम को पूरी उम्मीद हो गई तो उन्हों)**ने कहा कि या रब मेरे** (आप के वादे पर तो तसल्ली हो गई अब उस के होने की) **कोई निशानी मरे लिए तय कर दीजिए** (ताकि ज़्यादा शुक्र करूं), **कहा गया कि तुम्हारी** (वो) **निशानी यह है कि तुम तीन रात** (और तीन दिन तक) **लोगों से बात** (चीत) **न कर सकोगे हालांकि तन्दरूस्त होंगे** (कोई बीमारी न होगी और इसी वजह से अल्लाह का नाम लेते रहोगे और इबादत करते रहोगे)(10) **बस** (जब अल्लाह के हुक्म से ज़िकरिया अलैहिस्सलाम की बीवी को बच्चे की उम्मीद शुरू हुई और ज़िकरिया अलैहिस्सलाम की ज़बान बन्द हो गई तो अपने) **हुजरे में से** (निकल कर) **अपनी क़ौम के पास आए और** (क्योंकि ज़बान से बोल नहीं सकते थे इसलिए) **उनको इशारे से कहा कि तुम लोग सुबह और शाम अल्लाह की तस्बीह किया करो(11)** (फिर जब याहया अलैहिस्सलाम पैदा हुए और समझ की उम्र को पहुंचे तो उन को हुक्म हुआ कि) **ऐ याहया किताब** (तौरेत को कि उस वक़्त वो ही शरीअत की कितब थी और इन्जील

बाद में उतरी तो उस) **को मज़बूती से थाम लो** (यानी ख़ास कोशिश के साथ अमल करो), **और हमने उन को** (उनके) **बचपन ही में** (दीन की) **समझ दी थी(12) और ख़ास अपने पास से नर्म दिली और** (आख़लाक़ की) **पाकीज़गी दी थी, और वो बड़े परहेज़गार थे(13) और अपने मां बाप के ख़िदमत करने वाले और वो** (लोगों के साथ) **सरकशी करने वाले** (या अल्लाह तआला की) **नाफ़रमानी करने वाले न थे(14) और** (अल्लाह तआला के यहां ऐसे इज़्ज़तदार थे कि उनके बारे में अल्लाह की तरफ़ से यह कहा जाता है कि) **उन को** (अल्लाह तआला का) **सलाम पहुंचे जिस दिन कि वो पैदा हुए और जिस दिन कि उन्हें मौत आए और जिस दिन** (क़ियामत में) **ज़िन्दा हो कर उठाए जाएंगे(15)।**

नोटः- इस जगह दुआ से पहले हज़रत ज़िकरिया अलैहिस्सलाम ने अपनी कमज़ोरी का ज़िक्र किया इसी लिए आलिमों ने फ़रमाया कि इन्सान को चाहिए कि दुआ करने से पहले अल्लाह तआला की नेमतों अपनी कमज़ोरी और ज़रूरत का ज़िक्र करे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۟ فَاَرْسَلْنَآ
اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ
رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّ لَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّ لَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ
كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

आयत न० 16 से 21

और (ऐ पैग़म्बर) **इस किताब** (यानी कुरआन की इस सूरत) **में** (हज़रत) **मरयम** (अलैहिस्सलाम) **का क़िस्सा** (भी) **ज़िक्र कीजिए, जब कि वो अपने घर वालों से अलग** (होकर) **एक ऐसे मकान में गई जो पूरब की तरफ़ था(16) फिर उन** (घर वाले) **लोगों के सामने से उन्होंने** (बीच में) **पर्दा डाल लिया बस** (इस हालत में) **हमने अपना फ़रिशते** (जिबरील अलैहिस्सलाम) **को भेजा और वो** (फ़रिशता) **उन के सामने इन्सान के रूप में आया(17)** (तो हज़रत मरयम इन्सान समझ कर घबरा कर) **कहने लगीं कि मैं तुम से अल्लाह की पनाह मांगती हूं अगर तुम में** (कुछ) **अल्लाह का डर है** (तो यहां से हट जाओ)(18) **फ़रिशते ने कहा कि** (मैं इन्सान नहीं कि तुम मुझ से डरती

हो बल्कि) **मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ** (फ़रिशता) **हूं,** (और इसलिए आया हूं) **ताकि तुम को एक पाकीज़ा लड़का** (होने की ख़बर) **दूं(19) वो** (अचम्भे से) **कहने लगीं कि मेरे लड़का किस तरह हो जाएगा जब कि** (उसके लिए मर्द के साथ मिलाप ज़रूरी है और वो हुआ नहीं क्योंकि) **मुझको किसी इन्सान ने छुआ तक नहीं** (यानी न तो निकाह हुआ) **और न मैं बदकार हूं(20) फ़रिशते ने कहा कि** (बिना किसी इन्सान के छूने के) **ऐसे ही** (लड़का) **हो जाएगा,** (और मैं अपनी तरफ़ से नहीं कहता बल्कि) **तुम्हारे रब ने कहा है कि यह बात** (कि बिना बाप के बच्चा पैदा कर दूं) **मुझ को आसान है, और** (यह भी कहा है कि हम) **इस तरह** (यानी बिना बाप के) **इसलिए पैदा करेंगे ताकि हम उस लड़के को लोगों के लिए** (अपनी कुदरत की) **एक निशानी बनादें, और** (इसी तरह उसके वास्ते से लोगों को हिदायत पाने के लिए) **उस को रहमत का सामान बना दें और यह** (बेबाप के इस बच्चे का पैदा होना) **एक तय बात है** (जो ज़रूर होकर रहेगी)(21)।

नोटः- फ़रिशते को असली सूरत में देखना इन्सान के लिए आसान नहीं इसलिए हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम के सामने इन्सानी सूरत में ख़बर सुनाने आए और उन्होंने समझा कि कोई मर्द बुरे इरादे से आया इसलिए अल्लाह के वास्ते से डराया।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَ
كُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَ هُزِّىْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ
النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِىْ وَ اشْرَبِىْ وَ قَرِّىْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِىْٓ اِنِّىْ
نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾ ۚ

आयत न० 22 से 26

फिर (इस बात चीत के बाद जिबरील अलैहिस्सलाम ने उन के गरीबान में फूंक मार दी जिससे) **उनके पेट में बच्चा रह गया फिर** (जब अपने वक़्त पर हज़रत मरयम को बच्चा पैदा होने की निशानियां महसूस हुईं तो) **उसको लिए हुए** (अपने घर से) **किसी दूर जगह** (जंगल पहाड़ में) **अलग चली गईं(22) फिर** (जब दर्द शुरू हुआ तो) **ज़चगी के दर्द की वजह से खजूर के पेड़ की तरफ़ आईं** (कि उससे सहारा लें अब न कोई हमदर्द पास में, दर्द से बेचैन न ज़रूरत का सामान उधर

बच्चा होने पर बदनामी का ध्यान आख़िर घबरा कर) **कहने लगीं काश मैं इस** (हालत) **से पहले मर गई होती और ऐसी भूली बिसरी हो जाती कि किसी को याद भी न रहती(23) बस** (उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हज़रत) **जिबरील** (अलैहिस्सलाम पहुंचे और उन्होंने) **ने उन को** (इज़्ज़त की वजह से उनके ठहरने की जगह के) **नीचे से पुकारा** (जिसको हज़रत मरयम ने पहचाना कि यह उसी फ़रिश्ते की आवाज़ है जो पहले भी आया था और कहा) **कि तुम** (बेसरो सामानी या बदनामी के डर से) **दुखी मत हो** (क्योंकि) **तुम्हारे रब ने तुम्हारे** (ठहरने की जगह के) **नीचे एक नहर पैदा कर दी है(24) और इस खजूर के तने को** (पकड़ कर) **अपनी तरफ़ हिलाओ इससे तुम पर पकी हुई ताज़ा खजूरें झड़ेंगी(25) फिर** (इस फल को) **खाओ और** (वो पानी) **पियो और आंखें ठन्डी करो** (यानी बच्चे के देखने से और खाने पीने से और अल्लाह के यहां पसन्दीदा होने की निशानी से ख़ुश रहो)**, फिर** (जब बदनामी के डर का मौक़ा आए यानी किसी को इस क़िस्से का पता चले तो उसका यह इन्तिज़ाम हुआ है कि) **अगर तुम लोगों में से किसी को भी** (आता और ऐतराज़ करता) **देखो तो** (तुम कुछ मत बोलना बल्कि इशारे से उससे) **कह देना कि मैंने तो अल्लाह के वास्ते** (ऐसे) **रोज़े की मन्नत मान रक्खी है** (जिसमें बोलना बन्द है) **सो** (इस वजह से) **मैं आज** (दिन भर) **किसी आदमी से नहीं बोलूंगी** (और अल्लाह के ज़िक्र और दुआ में लगना और बात है बस तुम इतना जवाब देकर बेफ़िक्र हो जाना अल्लाह तआ़ला इस बच्चे को अपनी क़ुदरत से बोलता कर देगा जिससे इस करिशमे से तुम्हारी पाकी साबित हो जाएगी बस हर ग़म का इलाज हो गया)(26)।

नोटः- इस्लाम से पहले रोज़े में न बोलने की मन्नत करना जाइज़ था अब सिर्फ़ बुरी बात बोलने से परहेज़ करना ज़रूरी है न बोलना कोई इबादत नहीं अब ऐसी मन्नत मानना भी जाइज़ नहीं।

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا یٰمَرْیَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَیْـًٔا فَرِیًّا ﴿۲۷﴾ یٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّ مَا
كَانَتْ اُمُّكِ بَغِیًّا ﴿۲۸﴾ۖۚ فَاَشَارَتْ اِلَیْهِ ؕ قَالُوْا كَیْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِی الْمَهْدِ صَبِیًّا ﴿۲۹﴾ قَالَ اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ ؕ۫
اٰتٰىنِیَ الْكِتٰبَ وَ جَعَلَنِیْ نَبِیًّا ﴿۳۰﴾ۙ وَّ جَعَلَنِیْ مُبٰرَكًا اَیْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَ اَوْصٰنِیْ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَیًّا ﴿۳۱﴾ۖ وَّ
بَرًّۢا بِوَالِدَتِیْ ۫ وَ لَمْ یَجْعَلْنِیْ جَبَّارًا شَقِیًّا ﴿۳۲﴾ وَ السَّلٰمُ عَلَیَّ یَوْمَ وُلِدْتُّ وَ یَوْمَ اَمُوْتُ وَ یَوْمَ اُبْعَثُ حَیًّا ﴿۳۳﴾

आयत न० 27 से 33

(बस मरयम अलैहिस्सलाम की इस बात से तसल्ली हुई और ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए) **फिर वो उन को गोद में लिये हुए** (वहां से बस्ती को चलीं और) **अपनी क़ौम के पास लाईं, लोगों ने** (जो देखा कि उन की शादी तो हुई न थी यह बच्चा कैसा शक करके) **कहा ऐ मरयम तुमने बहुत बुरा काम किया** (यानी नऊज़ुबिल्लाह बदकारी की, और यूं तो बदकारी कोई भी करे बुरा है लेकिन तुम से ऐसा काम होना ज़्यादा बुरी बात है)(27) **ऐ हारून की बहन** (तुम्हारे ख़ानदान में कभी किसी ने ऐसा नहीं किया और) **तुम्हारे बाप कोई बुरे आदमी नहीं थे** (कि उनसे यह असर तुम में आया हो) **और न तुम्हारी मां बदकार थीं** (कि उन से यह असर तुम में आया हो, फिर हारून जो तुम्हारे रिशते के भाई हैं जिन का नाम हारून नबी के नाम पर रक्खा गया है वो कैसे कुछ नेक आदमी हैं बस जिसका ख़ानदान का ख़ानदान पाक साफ़ हो उससे यह हरकत होना कितना ज़्यादा बुरा है)(28) **बस मरयम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (ये सारी बातें सुनकर कुछ जवाब नहीं दिया बल्कि) **बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया** (इससे कहो जो कुछ कहना हो यह जवाब देगा), **वो लोग** (समझे कि ये हमारे साथ मज़ाक़ करती हैं) **कहने लगे कि भला हम ऐसे इन्सान से क्योंकर बातें करें जो अभी गोद में बच्चा ही है**(29) (इतने में) **वो बच्चा** (ख़ुद ही) **बोल उठा कि मैं अल्लाह का** (ख़ास) **बन्दा हूं** (न तो अल्लाह हूं जैसा कि जाहिल ईसाई समझेंगे और न ही नापसन्दीदा हूं जैसा कि यहूदी समझेंगे, और बन्दा होने की और फिर ख़ास होने की ये निशानियां हैं कि) **उसने मुझ को किताब** (यानी इन्जील) **दी** (यानी देगा मगर यक़ीनी होने की वजह से ऐसा ही है जैसा कि देदी) **और उसने मुझ को नबी बनाया** (यानी बनाएगा)(30) **और मुझको बरकत वाला बनाया** (यानी मुझ से लोगों को दीन का नफ़ा पहुंचेगा) **मैं जहां कहीं भी हूं**(गा मुझ से बरकत पहुंचेगी वो नफ़ा दीन की तबलीग़ है चाहे कोई माने या न माने उन्होंने तो नफ़ा पहुंचा ही दिया) **और उसने मुझ को नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक मैं** (दुनिया में) **ज़िन्दा रहूं** (और यह दलील है बन्दा होने की)(31) **और मुझ को मेरी मां की ख़िदमत करने वाला बनाया** (और चूंकि बे बाप पैदा हुए हैं इसलिए मां के बारे में कहा गया) **और उसने मुझको सरकश और बदनसीब नहीं बनाया** (कि अल्लाह तआ़ला या मां का हक़ अदा करने से सरकशी करूं या नेकी छोड़ कर बदनसीबी ख़रीद लूं)(32) **और मुझ पर** (अल्लाह की तरफ़ से) **सलाम है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा** (कि वो क़ियामत के नज़दीक ज़माने में आसमान से उतरने के बाद होगा) **और जिस दिन मैं** (क़ियामत में) **ज़िन्दा करके उठाया जाऊंगा** (और अल्लाह का सलाम दलील है ख़ास बन्दा होने की)(33)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि जो आदमी औलिया अल्लाह और नेक लोगों की औलाद में हो वो अगर कोई बुरा काम करता है तो वो आम लोगों के गुनाह से ज़्यादा बड़ा गुनाह होता है क्योंकि उससे उस के बड़ों की रूसवाई और बदनामी होती है इसलिए नेकों की औलाद को परहेज़गारी का ज़्यादा ध्यान करना चाहिए।

ذٰلِكَ عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ ۚ قَوۡلَ الۡحَـقِّ الَّذِىۡ فِيۡهِ يَمۡتَرُوۡنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنۡ يَّتَّخِذَ مِنۡ وَّلَدٍ ۙ سُبۡحٰنَهٗ ؕ اِذَا
قَضٰۤى اَمۡرًا فَاِنَّمَا يَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۳۵﴾ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّىۡ وَ رَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۳۶﴾
فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ مَّشۡهَدِ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۳۷﴾ اَسۡمِعۡ بِهِمۡ وَ اَبۡصِرۡ ۙ يَوۡمَ
يَاۡتُوۡنَنَا لٰـكِنِ الظّٰلِمُوۡنَ الۡيَوۡمَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۳۸﴾ وَ اَنۡذِرۡهُمۡ يَوۡمَ الۡحَسۡرَةِ اِذۡ قُضِىَ الۡاَمۡرُ ۘ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ وَّ
هُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّا نَحۡنُ نَرِثُ الۡاَرۡضَ وَمَنۡ عَلَيۡهَا وَاِلَيۡنَا يُرۡجَعُوۡنَ ﴿۴۰﴾ع

आयत न० 34 से 40

ये हैं ईसा बिन मरयम (अल्लाह के मक़बूल बन्दे न ऐसे जैसा कि ईसाइयों ने उनको ख़ुदा का दर्जा दिया न वैसे जैसा कि यहूदियों ने उन पर तरह-तरह के इल्ज़ाम लगाए हैं), **मैं** (बिल्कुल) **सच्ची बात कह रहा हूं जिसमें ये** (घटाने बढ़ाने वाले) **लोग झगड़ रहे हैं**(34) (हालांकि) **अल्लाह तआ़ला की यह शान नहीं है कि वो** (किसी को) **औलाद बनाए वो** (बिल्कुल) **पाक है,** (क्योंकि उस की यह शान है कि) **वो जब कोई काम करना चाहता है तो बस उसको इतना कह देता है कि होजा सो वो हो जाता** (है और ऐसे कमाल के वास्ते औलाद का होना कमी की बात) **है**(35) **और** (आप तौहीद के सबूत के लिए लोगों से कह दीजिए कि शिर्क करने वाले भी सुन लें कि) **बेशक अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है सो** (सिर्फ़) **उसी की इबादत करो,** (और) **ये ही** (ख़ालिस अल्लाह की इबादत करना यानी तौहीद अपनाना दीन का) **सीधा रास्ता है**(36) **सो** (फिर भी) **बहुत से गिरोहों ने** (इस बारे में) **आपस में फूट डाल ली** (यानी तौहीद का इनकार करके तरह- तरह के मज़हब बना लिये), **सो इन काफ़िरों के लिए एक बड़े** (भारी) **दिन के आजाने से बड़ी तबाही** (होने वाली) **है** (यानी क़ियामत के दिन)(37) **जिस दिन ये लोग** (हिसाब व बदले के लिए) **हमारे पास आएंगे** (उस दिन) **कैसे सुनने वाले और देखने वाले बन जाएंगे** (क्योंकि क़ियामत में असलीयत सामने आजाएगी और सभी ग़लतियां दूर हो जाएंगी) **लेकिन ये ज़ालिम आज**

(दुनिया में कैसी) **खुली ग़लती में** (पड़े हुए) **हैं(38) और आप इन लोगों को पछतावे के दिन से डराइये जब कि** (जन्नत व दोज़ख़ का) **आख़री फ़ैसला कर दिया जाएगा** (हदीस में है कि जन्नत और दोज़ख़ वालों को मौत दिखा कर उस को ज़बह कर दिया जाएगा और दोनो को सदा सदा उसी हाल में ज़िन्दा रहने का हुक्म सुना दिया जाएगा और उस वक़्त पछताने के सिवा कुछ न होगा), **और वो लोग** (आज दुनिया में) **भूल में** (पड़े) **हैं और ईमान नहीं लाते(39)** (लेकिन आख़िर एक दिन मरेंगे) **और सारी ज़मीन पर रहने वालों के वारिस** (यानी मालिक) **हम ही रह जाएंगे** (फिर अपने कुफ़्र व शिर्क की सज़ा भुगतेंगे)**(40)**।

नोटः- उस दिन को पछतावे का दिन इसलिए कहा गया कि जहन्नम वाले तो पछताएंगे ही कि अपने बुरे कामों से बाज़ क्यों न आगये। जन्नत वाले इस बात पर पछताएंगे कि और ज़्यादा नेक काम क्यों न कर लिये कि और ज़्यादा दर्जे जन्नत के मिलते।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۴۱﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ
وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۳﴾ يٰۤاَبَتِ
لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ
فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿۴۵﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ
مَلِيًّا ﴿۴۶﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿۴۷﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿۴۸﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ
اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿۴۹﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿۵۰﴾ ۧ

आयत न० 41 से 50

और (ऐ पैग़म्बर) **आप इस किताब** (यानी कुरआन) **में** (लोगों के सामने हज़रत) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **का** (क़िस्सा) **ज़िक्र कीजिए** (ताकि इन को तौहीद व पैग़म्बरी का मसअला अच्छी तरह समझ में आजाए) **वो** (हर बात में) **बड़े सच्चे** (थे और) **नबी थे(41)** (उस वक़्त की बात है) **जब कि उन्होंने अपने बाप से** (जो कि मुशरिक था) **कहा कि ऐ मेरे बाप तुम ऐसी चीज़ की क्यों इबादत**

करते हो जो न कुछ सुने और न कुछ देखे और न तुम्हारे कुछ काम आसके (यानी बुत, हालांकि अगर कोई देखता सुनता कुछ काम आता भी हो तब भी इबादत के लाइक़ नहीं और जो ऐसा भी नहीं उस की तो बात ही क्या)(42) **ऐ मेरे बाप मेरे पास ऐसा इल्म पहुंचा है जो तुम्हारे पास नहीं आया** (यानी वही जिसमें ग़लती हो ही नहीं सकती) **तो तुम मेरे कहने पर चलो मैं तुम को सीधा रास्ता बताउंगा** (और वो तौहीद है)(43) **ऐ मेरे बाप तुम शैतान की इबादत मत करो** (यानी शैतान के कहने में न चलो, और) **बेशक शैतान अल्लाह का नाफ़रमानी करने वाला** (है तो वो कब कहना मानने के लाइक़) **है(44) ऐ मेरे बाप मुझे ख़तरा है** (और वो ख़तरा यक़ीनी है) **कि तुम पर अल्लाह की तरफ़ से कोई अज़ाब न आजाए** (चाहे दुनिया में या आख़रत में) **फिर तुम** (अज़ाब में) **शैतान के साथी हो जाओ** (यानी जब कहना मानने में उस का साथ दोगे तो सज़ा में भी उस का साथ होगा)(45) **बाप ने** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ये नसीहतें सुन कर) **जवाब दिया कि तुम मेरे ख़ुदाओं से फिरे हुए हो ऐ इब्राहीम** (और इसलिए मुझको भी मना करते हो, याद रक्खो) **अगर तुम** (इन बुतों की बुराई से और मुझ को इनकी इबादत से मना करने से) **बाज़ न आए तो मैं तुम पर पत्थर बरसा**(कर मार)**दूंगा** (बस तुम इससे बाज़ आजाओ) **और सदा-सदा के लिए मुझ** (को कहने सुनने) **से अलग हो जाओ(46) इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा** (ठीक है) **मेरा सलाम लो** (अब तुम से कहना सुनना बेकार है) **अब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से मुआफ़ी की** (इस तरह) **दुआ करूंगा** (कि तुम को हिदायत करे जिससे मुआफ़ी हो)**, बेशक वो मुझ पर बहुत महरबान** (है इसलिए उसी से दुआ करूंगा जिसका क़ुबूल करना या न करना उसकी मर्ज़ी पर) **है(47) और** (तुम और तुम्हारे मज़हब के लोग जब मेरी सही बात को भी नहीं मानते तो तुम में रहना भी बेकार है इसलिए) **मैं तुम लोगों से और जिनकी तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत कर रहे हो उन से अलग होता हूं** (जैसा कि दिल से तो पहले ही अलग हूं यानी यहां रहता भी नहीं) **और** (अलग होकर तसल्ली से) **अपने रब की इबादत करूंगा** (क्योंकि यहां रह कर इसमें भी रूकावट होगी) **उम्मीद** (यानी यक़ीन) **है कि अपने रब की इबादत करके नाकाम न रहूंगा** (जैसा कि बुत परस्त अपने झूटे ख़ुदाओं की इबादत करके नाकाम रहते हैं, बस इस बात चीत के बाद उन से इस तरह अलग हुए मुल्क शाम की तरफ़ हिजरत करके चले गये)(48) **बस जब उन लोगों से और जिन की वो लोग अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते थे उन से** (इस तरह) **अलग हो गये** (तो) **हमने उन को इसहाक़** (बेटा) **और याक़ूब** (पोता) **दिया** (जिन का साथ उन बुत परस्त लोगों से कहीं बेहतर था)**, और हम ने** (उन दोनों में) **हर एक को नबी बनाया(49) और उन सब को**

हम ने (तरह-तरह की ख़ूबियां देकर) **अपनी रहमत का हिस्सा दिया और** (आगे नस्लों में) **हमने उन का नाम नेक और ऊंचा किया** (कि सब इज़्ज़त और तारीफ़ के साथ नाम लेते हैं और इसहाक़ से पहले इस्माईल इन्हीं ख़ूबियों के साथ दिये जा चुके थे)**(50)।**

وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۡ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾ وَ نَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَ
قَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ وَ كَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ ۠ وَ كَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَ اذْكُرْ فِي
الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّ رَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ
النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَ مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۡ وَّ مِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْرَآءِيْلَ ۡ وَ مِمَّنْ هَدَيْنَا وَ
اجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا ﴿٥٨﴾

आयत न० 51 से 58

और इस किताब (यानी कुरआन) **में मूसा** (अलैहिस्सलाम) **का भी ज़िक्र कीजिए** (यानी लोगों को सुनाइये वर्ना ज़िक्र करने वाला तो असलीयत में अल्लाह तआला है)**, वो बेशक अल्लाह के चुने हुए** (बन्दे) **थे और वो रसूल भी थे नबी भी थे(51) और हमने उन को तूर पहाड़ की दाहिनी तरफ़ से आवाज़ दी और हमने उन को राज़ की बातें करने के लिए नज़दीकी बनाया(52) और हम ने उनको अपनी रहमत** (और महरबानी) **से उनके भाई हारून को नबी बना कर**(एक मददगार)**दिया** (यानी उनकी दुआ के मुवाफ़िक़ उनको नबी बनाया कि उनकी मदद करें)**(53) और इस किताब में इस्माईल** (अलैहिस्सलाम) **का भी ज़िक्र कीजिए बेशक वो वादे के** (बड़े) **सच्चे थे और वो रसूल भी थे नबी भी थे(54) और अपने घर वालों को** (ख़ास कर और दूसरे लोगों को भी) **नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते रहते थे और वो अपने रब के नज़दीक पसन्दीदा थे(55) और इस किताब में इदरीस** (अलैहिस्सलाम) **का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वो बड़े सच्चाई वाले नबी थे(56) और हमने उनको** (ख़ूबियों में) **ऊंचे रूतबे तक पहुंचा दिया(57) ये वो लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला ने** (ख़ास) **इनआम किया है** (क्योंकि पैग़म्बरी से बड़ी कौन सी नेमत होगी) **दूसरे पैग़म्बरों के साथ** (ये सब) **आदम** (अलैहिस्सलाम) **की औलाद में से** (थे) **और** (कुछ उन में) **उन लोगों की औलाद में से** (थे) **जिन को हमने नूह** (अलैहिस्सलाम) **के साथ** (कशती में)

सवार किया था, और (कुछ उन में) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **और याकूब** (अलैहिस्सलाम) **की औलाद में से थे और** (ये सब) **उन लोगों में से** (थे) **जिन को हमने हिदायत दी और उन को** (अपने दीन के लिए) **चुना,** (और उनकी हालत यह थी कि) **जब उन के सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती थीं तो सजदा करते हुए और रोते हुए** (ज़मीन पर) **गिर जाते थे**(58)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि कुरआन की आयतों की तिलावत के वक़्त रोने की हालत पैदा हो जाना पसन्दीदा और पैग़म्बरों का तरीक़ा है और सहाबा और बुज़ुर्गों में ऐसे क़िस्से बहुत कसरत से हुए हैं। दूसरे ऊपर आईं आयतों में आख़री आयत सजदे की है कि उसके पढ़ने और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो जाता है।

فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ اِلَّا مَنۡ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ
عَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَنَّةَ وَ لَا يُظۡلَمُوۡنَ شَيۡـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدۡنِ ۣالَّتِىۡ وَعَدَ الرَّحۡمٰنُ عِبَادَهٗ بِالۡغَيۡبِ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ وَعۡدُهٗ مَاۡتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسۡمَعُوۡنَ فِيۡهَا لَغۡوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَ لَهُمۡ رِزۡقُهُمۡ فِيۡهَا بُكۡرَةً وَّ عَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلۡكَ الۡجَنَّةُ
الَّتِىۡ نُوۡرِثُ مِنۡ عِبَادِنَا مَنۡ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

आयत न० 59 से 63

फिर उन (लोगों) **के बाद** (कुछ) **ऐसे** (नालाइक़ लोग) **पैदा हुए जिन्होंने नमाज़ को बर्बाद किया** (चाहे ऐतक़ाद से इनकार किया या उसके अदा करने में बेपरवाई की) **और** (नाजाइज़) **मज़ों के पीछे पड़ गये सो ये लोग जल्दी ही** (आख़रत में) **ख़राबी देखेंगे** (चाहे सदा की हो या सदा की न हो)(59) **हां मगर जिसने** (कुफ़्र व गुनाह से) **तौबा कर ली** (और कुफ़्र से तौबा करने का मतलब यह है कि) **ईमान ले आया और** (गुनाह से तौबा करना यह है कि) **नेक काम करने लगा सो ये लोग** (बिना ख़राबी देखे) **जन्नत में जाएंगे और** (बदला मिलने के वक़्त) **उन का ज़रा नुक़सान न किया जाएगा** (यानी हर नेक काम का बदला मिलेगा)(60) **उन सदा रहने के बाग़ों में** (जाएंगे) **जिनका अल्लाह ने अपने बन्दों से उनके देखे बिना वादा किया है,** (और) **उसके वादा की हुई चीज़ को ये लोग ज़रूर पहुंचेगें**(61) **उस** (जन्नत) **में वो लोग कोई बेकार बात न सुनने पाएंगे** (क्योंकि वहां बेकार बात ही न होगी) **सिवाए** (फ़रिशतों और एक दूसरे के) **सलाम** (करने) **के** (और

सभी जानते हैं कि सलाम से बहुत ही ख़ुशी होती है तो वो बेकार नहीं), **और उन को खाना सुबह व शाम मिला करेगा** (यह तो तय होगा और वैसे अगर दूसरे वक़्त भी चाहें मिलेगा)(62) **यह जन्नत ऐसी है कि हम अपने बन्दों में से उस का मालिक ऐसे लोगों को बना देंगे जो कि अल्लाह से डरने वाले** (हों यानी ईमान वाले और नेक काम करने वाले) **हों**(63)।

नोटः- नमाज़ को बर्बाद करने में उसका वक़्त पर न पढ़ना या उसके आदाब के साथ न पढ़ना सब आगया।

وَ مَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمۡرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡنَا وَ مَا خَلۡفَنَا وَ مَا بَيۡنَ ذٰلِكَ ۚ وَ مَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿۶۴﴾ رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ مَا بَيۡنَهُمَا فَاعۡبُدۡهُ وَ اصۡطَبِرۡ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلۡ تَعۡلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿۶۵﴾ وَ يَقُوۡلُ الۡاِنۡسَانُ ءَاِذَا مَا
مِتُّ لَسَوۡفَ اُخۡرَجُ حَيًّا ﴿۶۶﴾ اَوَ لَا يَذۡكُرُ الۡاِنۡسَانُ اَنَّا خَلَقۡنٰهُ مِنۡ قَبۡلُ وَ لَمۡ يَكُ شَيۡـًٔا ﴿۶۷﴾ فَوَ رَبِّكَ لَنَحۡشُرَنَّهُمۡ وَ
الشَّيٰطِيۡنَ ثُمَّ لَنُحۡضِرَنَّهُمۡ حَوۡلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿۶۸﴾ ثُمَّ لَنَنۡزِعَنَّ مِنۡ كُلِّ شِيۡعَةٍ اَيُّهُمۡ اَشَدُّ عَلَى الرَّحۡمٰنِ
عِتِيًّا ﴿۶۹﴾ ثُمَّ لَنَحۡنُ اَعۡلَمُ بِالَّذِيۡنَ هُمۡ اَوۡلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿۷۰﴾ وَ اِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتۡمًا
مَّقۡضِيًّا ﴿۷۱﴾ ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيۡنَ اتَّقَوْا وَّ نَذَرُ الظّٰلِمِيۡنَ فِيۡهَا جِثِيًّا ﴿۷۲﴾

आयत न० 64 से 72

नोटः- बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिबरील अलैहिस्सलाम से कहा कि ज़रा ज़्यादा आया करो इस पर ये आयत उतरीः-

और (फ़रिशते आप से यह कहते हैं कि) **हम बिना आप के रब के हुक्म के उतर कर नहीं आ सकते, उसी की हैं सब चीज़ें हमारे आगे की और हमारे पीछे की और जो कुछ उनके बीच में हैं, और आप का रब भूलने वाला नहीं** (बस हर काम हिसाब से करता है)(64) **वो रब है आसमानों का और ज़मीन का और उन सब चीज़ों का जो इन दोनों के बीच में हैं सो** (जब ऐसा हाकिम व मालिक है तो) **आप उसकी इबादत** (और ताबेदारी) **किया करो और** (एक दो बार नहीं बल्कि) **उस की इबादत पर जमे रहो,** (और अगर उस की इबादत न करोगे तो क्या दूसरे की इबादत करोगे) **भला क्या आप किसी को उस जैसा जानते हो** (बस जब उस जैसा

कोई नहीं तो इबादत के लाइक़ भी कोई नहीं बस उसी की इबादत करना ज़रूरी हुआ)(65) **और** (आख़रत का इनकार करने वाला) **इन्सान यह कहता है कि मै जब मरजाउंगा तो क्या फिर ज़िन्दा करके** (क़ब्र से) **निकाला जाउंगा**(66) (अल्लाह तआ़ला जवाब देते हैं कि) **क्या** (यह) **इन्सान इस बात को नहीं समझता कि हम इसको इससे पहले पैदा कर चुके हैं और यह** (उस वक़्त) **कुछ भी न था** (जब ऐसी हालत से ज़िन्दगी की तरफ़ लाना आसान है तो दोबारा ज़िन्दगी देना तो और भी आसान है)(67) **सो क़सम है आप के रब की हम उन को** (क़ियामत में ज़िन्दा करके हश्र के मैदान में) **जमा करेंगे और** (उन के साथ) **शैतानों को भी** (जो दुनिया में उनके साथ रह कर बहकाते सिखाते थे) **फिर उन** (सब) **को दोज़ख़ के इर्द गिर्द इस तरह ले आएंगे कि** (डर के मारे) **घुटनों के बल गिरे होंगे**(68) **फिर** (इन काफ़िरों के) **हर गिरोह में से** (जैसे यहूदी, ईसाई, मजूसी व बुत परस्त) **उन लोगों को अलग करेंगे जो इन में सब से ज़्यादा अल्लाह से सरकशी किया करते थे** (ताकि ऐसो को दूसरों से पहले दोज़ख़ में दाख़िल करें)(69) **फिर** (यह नहीं कि इस अलग करने में हम को किसी जांच पड़ताल की ज़रूरत पड़े क्योंकि) **हम** (ख़ुद) **ऐसे लोगों को अच्छी तरह जानते हैं जो दोज़ख़ में** (सबसे पहले) **जाने के ज़्यादा हक़दार हैं** (फिर दूसरे काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और मोमिन दोज़ख़ देखने के बाद जब जन्नत में जाएंगे तो ज़्यादा शुक्र करेंगे और ख़ुश होंगे)(70) **और** (कुछ गुनाहगारों को कुछ दिनों की सज़ा के लिए जो कि असलीयत में गुनाहों से पाकी के लिए है इसी बात की ख़बर दी जाती है कि) **तुम में से कोई भी नहीं जिस का उस** (दोज़ख़) **पर गुज़र न हो** (कोई उसमें जाएगा कोई उससे पार होगा) **यह** (वादा) **आप के रब की तरफ़ से है जो ज़रूर पूरा होगा**(71) **फिर** (इस जहन्नम पर गुज़रने से यह न समझा जाए कि इसमें मोमिन व काफ़िर बराबर है बल्कि) **हम उन लोगों को बचाएंगे जो अल्लाह से डर**(कर ईमान ला)**ते थे** (चाहे शुरू में ही बचाएं जैसे नेक मोमिन और चाहे कुछ सज़ा के बाद जैसे कि गुनाहगार मोमिन) **और ज़ालिमों को** (यानी काफ़िरों को) **इसमें** (सदा के लिए) **ऐसी हालत में रहने देंगे कि** (डर के मारे) **घुटनों के बल पड़े होंगे**(72)।

नोटः- तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि जहन्नम में पहले उनको दाख़िल किया जाएगा जिन का जुर्म सबसे ज़्यादा होगा उसके बाद दूसरे तीसरे दर्जे के मुजरिम लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّ اَحْسَنُ نَدِيًّا ۝٧٣
وَ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّ رِءْيًا ۝٧٤ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ
حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَ اِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضْعَفُ جُنْدًا ۝٧٥ وَ
يَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَ الْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ مَّرَدًّا ۝٧٦

आयत न० 73 से 76

और जब इन (काफ़िरों) **के सामने हमारी** (वो) **साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं** (जिन में मोमिनों का हक़ पर होना और काफ़िरों का ग़लती पर होना बयान होता है) **तो ये काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि** (यह बताओ हम) **दोनो फ़रीक़ों में** (यानी हम में और तुम में दुनिया में) **मकान किस का ज़्यादा अच्छा है और महफ़िल किस की अच्छी है** (यानी घरेलू साज़ो सामान और साथियों में हम बढ़े हुए हैं, और इनआम व अहसान और महरबानी उसके लिए होती है जो प्यारा और पसन्द हो इससे साबित हुआ कि हम अल्लाह के प्यारे और पसन्दीदा हैं)**(73) और** (अल्लाह तआ़ला जवाब देते हैं यह नहीं देखते कि) **हम ने उनसे पहले बहुत से ऐसे गिरोह** (सख़्त सज़ाओं के अज़ाब से) **हलाक किये हैं जो सामान और आनबान में इन से भी** (कहीं ज़्यादा) **अच्छे थे** (इससे पता चला कि दुनिया की नेमतें नापसन्द और मरदूद को भी मिल सकती हैं)**(74) आप** (ऐ पैग़म्बर) **कह दीजिए कि जो लोग गुमराही में हैं** (यानी तुम) **अल्लाह तआ़ला उन को ढील देता चला जा रहा है** (ताकि सज़ा के लिए दलील बन जाएं)**, यहां तक कि जिस चीज़ का उनसे वादा किया गया है जब उस को देख लेंगे चाहे** (वो इस दुनिया का) **अज़ाब हो या क़ियामत, तो** (उस वक़्त) **उन को पता चल जाएगा कि बुरा मकान किसका है और कमज़ोर मददगार किसके हैं** (क्योंकि वहां तो किसी का ज़ोर होगा ही नहीं)**(75) और** (मुसलमानों का यह हाल है कि) **अल्लाह तआ़ला हिदायत वालों को** (दुनिया में तो) **हिदायत बढ़ाता है** (यानी असल दौलत यह है कि अगर उसके साथ मालो दौलत न हो नुक़सान नहीं)**, और** (आख़रत में पता चलेगा कि) **जो नेक काम सदा बाक़ी रहने वाले हैं वो तुम्हारे रब के यहां सवाब में भी बहुत अच्छे हैं और अन्जाम में भी बहुत अच्छे हैं** (बस उनको सवाब में बड़ी-बड़ी नेमतें मिलेंगी जिनमें मकान और बाग़ सब कुछ होंगे और अन्जाम इन नेक कामों का सदा-सदा का है बस मुसलमानों ही की हालत आख़ीर में अच्छी होगी)**(76)**।

नोटः- असल दौलत बाक़ी रहने वाली नेकियां हैं और सब चीज़ें फ़ना हो जाने वाली हैं इसलिए नेक कामों में कोशिश करें।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَ قَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّ وَلَدًا ۝٧٧ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝٧٨
كَلَّا ۭ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَ نَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۝٧٩ وَّ نَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَ يَاْتِيْنَا فَرْدًا ۝٨٠ وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۝٨١ كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَ يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝٨٢

आयत न० 77 से 82

(ऐ पैग़म्बर) **भला आपने उस आदमी** (की हालत) **को भी देखा है जो हमारी आयतों को मानने से इनकार करता है** (जब कि हक़ यह था कि उन पर ईमान लाता और जिनमें वो आयतें भी हैं जिन में पैग़म्बर की ख़बर दी गई है) **और** (मज़ाक़ उड़ाते हुए) **कहता है कि मुझ को** (आख़रत में भी) **माल और औलाद मिलेंगे(77) क्या यह आदमी ग़ैब** (की बातों) **को जान गया या उसने अल्लाह तआला से कोई एहद** (इस बात का) **ले लिया है(78) हरगिज़ नहीं** (बस ग़लत कहता है, और) **हम उसका कहा हुआ भी लिख लेते हैं और** (वक़्त पर यह सज़ा देंगे कि) **उसके लिए अज़ाब बढ़ाते चले जाएंगे(79) और उस की कही हुई चीज़ों के हम ही मालिक रह जाएंगे** (यानी वो तो दुनिया से मर जाएगा और माल व औलाद पर उस का कोई बस न रहेगा हम ही सब के मालिक रहेंगे और क़ियामत में हम उस को न देंगे बल्कि) **वो हमारे पास** (माल और औलाद से) **अकेला हो कर आएगा(80) और इन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरे माबूद बना रक्खे हैं ताकि उनके लिए वो** (अल्लाह के यहां) **मददगार बनें(81)** (ऐसा) **हरगिज़ नहीं** (होगा), **बल्कि वो तो** (क़ियामत में ख़ुद) **उन की इबादत ही का इनकार कर देंगे और** (उल्टे) **उनके मुख़ालिफ़ हो जाएंगे** (और उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे)(82)।

नोटः- आस बिन वाइल ने हज़रत ख़ुबाब से हंसी उड़ाते हुए कहा था कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ उस वक़्त चुका दूंगा जब मर कर दोबारा ज़िन्दा हूंगा क्यूंकि उस वक़्त भी मेरे पास माल और औलाद होंगे इस पर ये आयतें उतरीं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّیٰطِیْنَ عَلَی الْكٰفِرِیْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿۸۳﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿۸۴﴾ یَوْمَ
نَحْشُرُ الْمُتَّقِیْنَ اِلَی الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾ وَّ نَسُوْقُ الْمُجْرِمِیْنَ اِلٰی جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾ لَا یَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ
عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿۸۷﴾

आयत न० 83 से 87

(ऐ पैग़म्बर आप जो इन की गुमराही से ग़म करते हैं तो) **क्या आप को पता नहीं कि हम ने शैतानों को काफ़िरों पर** (आज़माने के लिए) **छोड़ रक्खा है कि वो उन को** (कुफ़्र और गुमराही पर) **ख़ूब उभारते** (और उकसाते) **रहते हैं** (फिर जो ख़ुद ही अपनी मर्ज़ी से अपने बुरा चाहने वाले के बहकाने में आजाए उस का क्यों ग़म किया जाए)(83) **सो** (जब शैतान आज़माने के लिए छोड़े गये हैं और जल्दी सज़ा देने में इम्तिहान रहता नहीं तो) **आप उनके लिए जल्दी** (अज़ाब होने की दुआ) **न कीजिए, हम उन की बातें** (जिन पर सज़ा होगी) **ख़ुद गिन रहे हैं**(84) (और वो सज़ा उस दिन होगी) **जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह** (के नेमतों के घर) **की तरफ़ महमान बना कर जमा करेंगे**(85) **और मुजरिमों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासे** (जानवरों की तरह) **चला कर ले जाएंगे**(86) (और कोई उन का सिफ़ारिशी भी न होगा क्योंकि वहां) **कोई सिफ़ारिश न कर सकेगा सिवाए उसके जिसने अल्लाह के पास से इजाज़त ली** (है वो पैग़म्बर और नेक लोग हैं और इजाज़त ख़ास है मोमिनों के लिए बस सिफ़ारिश काफ़िरों के लिए नहीं) **है**(87)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हो गया कि मुशरिक लोग जिनको सिफ़ारिशी समझ कर उनकी इबादत कर रहे हैं तो धोके में हैं क्योंकि अगर वो अल्लाह के यहां मक़बूल हैं तो अल्लाह के बाग़ी की कैसे सिफ़ारिश कर सकते हैं और अगर नामक़बूल हैं तो उनको सिफ़ारिश की इजाज़त नहीं हो सकती।

وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿۸۸﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَیْـًٔا اِدًّا ﴿۸۹﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ یَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَ تَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَ تَخِرُّ
الْجِبَالُ هَدًّا ﴿۹۰﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿۹۱﴾ وَ مَا یَنْۢبَغِیْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ یَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿۹۲﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِی الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿۹۳﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَ عَدَّهُمْ عَدًّا ﴿۹۴﴾ وَ كُلُّهُمْ اٰتِیْهِ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فَرْدًا ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَیَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾ فَاِنَّمَا یَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِیْنَ وَ تُنْذِرَ بِهٖ

قَوۡمًا لُّدًّا ﴿۹۷﴾ وَ كَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ ؕ هَلۡ تُحِسُّ مِنۡهُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ اَوۡ تَسۡمَعُ لَهُمۡ رِكۡزًا ﴿۹۸﴾

आयत न० 88 से 98

और ये (काफ़िर जैसा कि बहुत से ईसाई और यहूदी और अरब के मुशरिक) **लोग कहते हैं कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **अल्लाह तआ़ला के औलाद** (भी) **है**(88) (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **तुम ने** (जो) **यह** (बात कही तो) **ऐसी सख़्त बात कही है(89) कि हो सकता है कि इसकी वजह से आसमान फट जाएं और ज़मीन के टुकड़े हो जाएं और पहाड़ टूट कर गिर जाएं(90) इस बात से कि ये लोग अल्लाह तआ़ला के बारे में औलाद होने का दावा करते हैं(91) जब कि अल्लाह तआ़ला की यह शान नहीं है कि उसके कोई औलाद हो**(92) (क्योंकि) **जितने कुछ भी आसमानों और ज़मीन में हैं सब अल्लाह तआ़ला के सामने ग़ुलाम होकर हाज़िर होते हैं**(93) (और) **उसने सब को** (अपनी क़ुदरत के) **घेरे में ले रक्खा है और** (अपने इल्म से) **सब को गिन रक्खा है** (यहां तक कि उनकी सांसें, उनके क़दम, खाने के लुक़्मे और पानी के घूंट तक गिने हुए हैं न कम हो सकते हैं न ज़्यादा हो सकते हैं)(94) **और क़ियामत के दिन सब के सब उसके पास अकेले-अकेले आएंगे** (कि हर कोई अल्लाह का मोहताज होगा बस अगर अल्लाह के औलाद हो तो अल्लाह की तरह ख़ूबियों वाली होगी ऐसा कोई नहीं हो सकता तो अल्लाह के औलाद भी नहीं)(95) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये अल्लाह तआ़ला** (उनको आख़रत की नेमतों के सिवा दुनिया में भी यह नेमत देगा कि) **उनके लिए** (लोगों के दिल में) **मुहब्बत पैदा कर देगा**(96) **सो** (आप उनको यह ख़ुशख़बरी देदीजिए क्योंकि) **हमने इस क़ुरआन को आप की ज़बान** (अरबी) **में इसलिए आसान बना दिया है कि आप इससे परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी सुना दें और इससे** (ज़िद्दी और) **झगड़ने वाले आदमियों को डराएं**(97) **और** (सुनादें कि) **उन से पहले हम बहुत सी क़ौमों को** (अज़ाब से) **हलाक कर चुके हैं,** (सो) **क्या आप उनमें से किसी को देखते हैं या उन** (में से किसी) **की कोई आहिस्ता आवाज़** (या आहट) **सुनते हैं** (मतलब यह है कि उन को बेनामो निशान कर दिया, तो काफ़िर सज़ा के भी हक़दार हैं चाहे किसी वजह से ऐसा न हो मगर ख़तरे की बात तो है)(98)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे को पसन्द करते हैं तो जिबरील अमीं से कहते हैं कि मैं उस आदमी से मुहब्बत करता हूं तुम भी उससे मुहब्बत करो। जिबरील अमीं

सारे आसमानों में उस की मुनादी करते हैं और सब आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं फिर यह मुहब्बत ज़मीन पर उतरती है तो ज़मीन वाले भी सब उस अल्लाह के प्यारे से मुहब्बत करने लगते हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इब्ने हरम बिन हय्यान रह० ने फ़रमाया कि जो आदमी अपने पूरे दिल से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ध्यान लगा लेता है तो अल्लाह तआ़ला तमाम ईमान वालों का ध्यान उसकी तरफ़ कर देते हैं। (क़ुरतबी)

20-सूरत-ताहा

इस मक्की सूरत में '8' रूकू और '135' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

नोटः- जिस ज़माने में यह सूरत उतरी वो मुसलमानों के लिए बड़े इम्तिहान और तकलीफ़ का था। मक्के के काफ़िरों ने जीना मुश्किल कर रक्खा था इसलिए इसमें मुसलमानों को तसल्ली दी गई है कि पहली उम्मतों के साथ भी परीशानियां आई हैं लेकिन आख़री अन्जाम उन्हीं के हक़ में हुआ है। और हज़रत उमर रज़ि० भी इसी सूरत को सुन कर ईमान लाए थे। एक हदीस में है कि अल्लाह तआला ने जब सूरत 'यासीन' और 'ताहा' फ़रिशतों को सुनाई तो फ़रिशतों ने कहा कि बड़ी ख़ुशनसीब है वो उम्मत जिस पर ये सूरतें उतरेंगी और मुबारक हैं वो सीने जो इनको हिफ़्ज़ याद रक्खेंगे और मुबारक हैं वो ज़बानें जो इनको पढ़ेंगी।

طٰہٰ ۚ﴿۱﴾ مَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡکَ الۡقُرۡاٰنَ لِتَشۡقٰۤی ۙ﴿۲﴾ اِلَّا تَذۡکِرَۃً لِّمَنۡ یَّخۡشٰی ۙ﴿۳﴾ تَنۡزِیۡلًا مِّمَّنۡ خَلَقَ الۡاَرۡضَ وَ السَّمٰوٰتِ الۡعُلٰی
﴿۴﴾ اَلرَّحۡمٰنُ عَلَی الۡعَرۡشِ اسۡتَوٰی ﴿۵﴾ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ وَ مَا بَیۡنَہُمَا وَ مَا تَحۡتَ الثَّرٰی ﴿۶﴾ وَ اِنۡ
تَجۡہَرۡ بِالۡقَوۡلِ فَاِنَّہٗ یَعۡلَمُ السِّرَّ وَ اَخۡفٰی ﴿۷﴾ اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ؕ لَہُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰی ﴿۸﴾

आयत न० 01 से 08

ताहा (का मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **हम ने आप पर कुरआन** (मजीद) **इसलिए नहीं उतारा कि आप तकलीफ़ उठाएं(02) बल्कि ऐसे आदमी की नसीहत के लिए** (उतारा है) **जो** (अल्लाह से) **डरता हो(03) यह उस** (हस्ती) **की तरफ़ से उतारा गया है जिसने ज़मीन को और ऊंचे आसमानों को पैदा किया है(04)** (और) **वो बड़ी रहमत वाला अर्श पर** (जो बादशाहों की कुर्सी जैसा है इस तरह) **क़ाइम** (और जलवा किये हुए है जो कि उसकी शान के लाइक़) **है(05)** (और वो ऐसा है कि) **वो ही मालिक है उन** (सब) **का जो चीज़ें आसमानों में हैं और जो चीज़ें ज़मीन में हैं और जो चीज़ें इन दोनों के बीच में हैं** (यानी आसमान से नीचे और ज़मीन से

ऊपर) **और** (वो चीज़ें भी) **जो ज़मीन की तह में हैं(06)** (ये तो अल्लाह तआ़ला की कुदरत व हुकूमत थी) **और** (इल्म की यह शान है कि) **अगर तुम पुकार कर बात कहो तो** (उसके सुनने में तो क्या शक है) **वो तो** (ऐसा है कि) **चुपके से कही बात को** (भी जानता है) **और** (बल्कि) **उससे भी ज़्यादा छुपी बात को** (भी) **जानता** (है यानी जो अभी दिल में) **है(07)** (वो) **अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई माबूद** (होने का हक़दार) **नहीं, उसके** (बड़े) **अच्छे-अच्छे नाम हैं** (जो उसकी ख़ूबियों की दलील हैं सो यह कुरआन ऐसी हस्ती का उतारा हुआ है और बेशक हक़ है)**(08)।**

नोटः- हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिस आदमी की भलाई का इरादा फ़रमाते हैं उसे दीन का इल्म और समझ बूझ दे देते हैं। (सहीहैन)

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ﴿٩﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ
عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿١١﴾ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾ وَ
اَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ
اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ
فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾

आयत न० 09 से 16

और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **क्या आप को मूसा** (अलैहिस्सलाम के क़िस्से) **की ख़बर पहुंची** (है जिसमें तौहीद और पैग़म्बरी के इल्म होने की वजह से सुनने के क़ाबिल) **है(09)** (वो क़िस्सा यह है) **जब कि उन्होंने** (मदयन से आते हुए एक रात को जिसमें सर्दी भी थी और रास्ता भी भूल गये थे तूर पहाड़ पर) **एक आग देखी** (कि असलीयत में वो नूर था मगर देखने में आग सी थी) **तो अपने घर वालों से कहा कि तुम** (यहां ही) **ठहरे रहो** (यानी मेरे पीछे-पीछे मत आना) **मैंने एक आग देखी है** (मैं वहां जाता हूं) **शायद मैं उस में से तुम्हारे पास कोई अंगारा** (किसी लकड़ी में लगा कर) **लाऊं** (ताकि सर्दी का इलाज हो) **या** (वहां) **आग के पास रास्ते का पता** (जानने वाला कोई आदमी भी) **मुझ को मिल जाए(10) सो जब वो उस** (आग) **के पास पहुंचे तो**

(उन को अल्लाह की तरफ़ से) **आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा(11) मैं तुम्हारा रब हूं बस तुम अपने जूते उतार दो** (क्योंकि) **तुम एक पाक मैदान यानी तुवा में हो** (तुवा उस मैदान का नाम है)(12) **और मैंने तुम को** (नबी बनाने के लिए) **चुन लिया है सो** (इस वक़्त) **जो कुछ वही की जा रही है उस को** (ध्यान से) **सुन लो(13)** (वो यह है कि) **मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई माबूद** (होने के लाइक़) **नहीं तो तुम मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद के लिए नमाज़ पढ़ा करो(14)** (दूसरी बात यह सुनो कि) **बेशक क़ियामत आने वाली है मैं उस** (के वक़्त) **को** (सब से) **छुपा कर रखना चाहता हूं** (और क़ियामत इसलिए आएगी) **ताकि हर आदमी को उसके किये का बदला मिल जाए(15) सो** (जब क़ियामत का आना यक़ीनी है तो) **तुम को क़ियामत** (के लिए तैयार रहने) **से ऐसा आदमी रोकने न पाए जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपने मज़ों के पीछे पड़ा है** (यानी तुम ऐसे आदमी के असर से क़ियामत के लिए तैयारी करने से बेफ़िक्र न हो जाना) **कहीं तुम** (इस बेफ़िक्री की वजह से) **तबाह न हो जाओ(16)।**

नोटः- कोई नबी व रसूल जो मासूम है वो क़ियामत की तरफ़ से बेपरवा नहीं हो सकता इसके बावजूद उनको नसीहत करना असल में उनकी उम्मत और आम लोगों को सुनाना है कि जब अल्लाह के पैग़म्बरों को भी ऐसी ताकीद की जाती है तो हमें इसका कितना ध्यान करना चाहिए। दूसरी बात यह है कि जूते चाहे पाक हों मगर अदब की जगह उतार देने चाहिएं।

وَ مَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَ اَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَ لِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ
اُخْرٰى ﴿۱۸﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿۱۹﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿۲۰﴾ قَالَ خُذْهَا وَ لَا تَخَفْ ۫ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا
الْاُوْلٰى ﴿۲۱﴾ وَ اضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ۙ﴿۲۲﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ۚ﴿۲۳﴾
اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ؑ﴿۲۴﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۙ﴿۲۵﴾ وَ يَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ۙ﴿۲۶﴾ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ
لِّسَانِيْ ۙ﴿۲۷﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۪﴿۲۸﴾ وَ اجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ۙ﴿۲۹﴾ هٰرُوْنَ اَخِي ۙ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ۙ﴿۳۱﴾ وَ اَشْرِكْهُ فِيْٓ
اَمْرِيْ ۙ﴿۳۲﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۙ﴿۳۳﴾ وَّ نَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ؕ﴿۳۴﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿۳۵﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ
يٰمُوْسٰى ﴿۳۶﴾

आयत न० 17 से 36

और (अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा) **यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या चीज़ है ऐ मूसा**(17) **उन्होंने कहा कि यह मेरी लाठी** (असा) **है मैं** (कभी) **इस पर सहारा लगाता हूं और** (कभी) **इससे अपनी बकरियों पर** (पेड़ों के) **पत्ते झाड़ता हूं और इसमें मेरे और भी काम** (निकलते) **हैं** (जैसे सताने वाले जानवरों से बचाव)(18) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **कि इस** (असा) **को** (ज़मीन पर) **डाल दो ऐ मूसा**(19) **सो उन्होंने उस को** (ज़मीन पर) **डाल दिया तो अचानक वो** (अल्लाह की कुदरत से) **एक दौड़ता हुआ सांप बन गया** (जिससे मूसा अलैहिस्सलाम डर गये)(20) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **कि इस को पकड़ लो और डरो नहीं हम अभी** (पकड़ते ही) **इसको पहली हालत पर लौटा देंगे** (यानी फिर असा बन जाएगा और तुम को तकलीफ़ न पहुंचेगी एक मोजिज़ा तो यह हुआ)(21) **और** (दूसरा मोजिज़ा यह है कि) **तुम अपना** (दाहिना) **हाथ अपनी** (बाईं) **बग़ल में दबाओ** (फिर निकालो) **वो बिना किसी बीमारी के** (बहुत) **चमकदार होकर निकलेगा कि यह दूसरी निशानी** (हमारी कुदरत और तुम्हारी पैग़म्बरी की) **होगी**(22) (और यह हुक्म लाठी को डाल देने और हाथ को गरीबान में देने का इसलिए है) **ताकि हम तुम को अपनी** (कुदरत की) **बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियां दिखाएं**(23) (तो अब ये निशानियां लेकर) **तुम फ़िरऔन के पास जाओ** (और उसको समझाओ और नबी होने में शक करे तो ये मोजिज़े दिखाओ) **वो बहुत हद से निकल गया** (है कि वो ख़ुदाई का दावा करता) **है**(24) (जब मूसा अलैहिस्सलाम को पता चला कि मुझको पैग़म्बर बनाकर फ़िरऔन को समझाने के लिए भेजा जा रहा है तो उस वक़्त इस बड़े काम में आसानी के लिए दुआ की और) **कहा कि या रब मेरे मेरा हौसला** (और ज़्यादा) **खोल दीजिए** (कि तबलीग़ में घबराहट या झुटलाने या मुख़ालफ़त के वक़्त घुटन न हो)(25) **और मेरा** (यह तबलीग़ का) **काम आसान कर दीजिए**(26) **और मेरी ज़बान पर से** (लुकनत का) **बन्द हटा दीजिए**(27) **ताकि लोग मेरी बात समझ सकें**(28) **और मेरे वास्ते मेरे ख़ानदान में से एक मददगार तय कर दीजिए**(29) **यानी हारून को जो मेरे भाई हैं**(30) **उनके वास्ते से मेरी ताक़त मज़बूत कर दीजिए**(31) **और उन को मेरे** (इस तबलीग़ के) **काम में साझी कर दीजिए** (यानी उन को भी पैग़म्बर बना कर इस काम में साथ कर दीजिए कि हम दोनों मिल कर तबलीग़ करें और मेरे दिल को ताक़त पहुंचे)(32) **ताकि हम दोनो** (मिल कर तबलीग़ व दावत के वक़्त शिर्क व ऐबों से) **आप की बहुत ज़्यादा पाकी बयान करें**(33) **और आप** (की ख़ूबियों और कमालों) **का बहुत ज़्यादा ज़िक्र करें** (क्योंकि जब दो होंगे तो ज़्यादा असर होगा)(34) **बेशक आप हम को** (और हमारे हाल को)

अच्छी तरह देख रहे हैं(35) (अल्लाह तआ़ला ने) **कहा कि तुम्हारी** (हर) **दुआ** (जो यहां मांगी गई है) **पूरी की गई ऐ मूसा**(36)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि हाथ में असा रखना पैग़म्बरों की सुन्नत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी ये ही सुन्नत थी और इसमें अनगिनत दीनी व दुनियवी फ़ाइदे हैं।

وَ لَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ
فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَ عَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَ اَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ ۚ۬ وَ لِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِىْ ﴿٣٩﴾ اِذْ
تَمْشِىْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ ؕ۬ وَ قَتَلْتَ
نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَ فَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۬ۚ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۬ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَ
اصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَ اَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ وَ لَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا
لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾

आयत न० 37 से 44

और हम तो (इससे पहले) **और मौक़ों पर** (बे मांगे ही) **और भी तुम पर अहसान कर चुके हैं**(37) **जब कि हमने तुम्हारी मां को वो बात इलहाम से बताई** (यानी दिल में डाली) **थी जो** (ख़ास होने की वजह से) **इलहाम से बताने की थी**(38) (वो) **यह कि मूसा को** (जल्लादों के हाथ से बचाने के लिए) **एक सन्दूक़ में रक्खो फिर इन को** (सन्दूक़ के साथ) **दरिया में डाल दो** (और वो दरिया फ़िरऔन के महल की तरफ़ से जाता था) **फिर दरिया उन को** (सन्दूक़ के साथ) **किनारे** (के पास) **तक ले आएगा कि** (जिसके नतीजे में) **उन को एक ऐसा आदमी उठा लेगा जो** (काफ़िर होने की वजह से) **मेरा भी दुशमन है और उन का भी दुशमन** (होगा), **और** (जब सन्दूक़ उठा लिया गया और तुम उस में से निकाले गये तो) **मैंने तुम्हारे** (चेहरे के) **ऊपर अपनी तरफ़ से एक असर मुहब्बत का डाल दिया** (ताकि जो तुम को देखे प्यार करे) **और** (यह सब इस लिए किया) **ताकि तुम मेरी** (ख़ास) **देख रेख में परवरिश पाओ**(39) (यह उस वक़्त का क़िस्सा है) **जब कि तुम्हारी बहन** (तुम्हारी तलाश में फिरऔन के घर) **चलती हुई आईं फिर** (तुम को देख कर अन्जान बन कर) **कहने लगीं** (जब कि तुम किसी अन्ना का दूध न पीते थे) **क्या तुम लोगों को**

ऐसी औरत का पता दूं जो इस को (अच्छी तरह) **पाले रक्खे** (बस उन लोगों ने मान लिया), **फिर** (इस तरह) **हम ने तुम को तुम्हारी मां के पास फिर पहुंचा दिया ताकि उन की आंखें ठन्डी रहें और उन को ग़म न रहे** (जैसा थोड़ी देर तक जुदाई से दुखी रहीं), **और** (बड़े होने के बाद एक और अहसान किया कि) **तुम ने** (ग़लती से) **एक** (फ़िरऔनी) **आदमी को जान से मार दिया** (जिस का क़िस्सा सूरत क़सस में है और मार कर दुःख हुआ और बदला लिये जाने का डर भी) **फिर हम ने तुम को इस ग़म से छुटकारा दिया** (इस तरह कि तौबा की तौफ़ीक़ दी और उसको क़ुबूल किया और मिस्र से मदयन पहुंचा दिया कि बदला लिये जाने का डर भी न रहे) **और** (मदयन पहुंचने तक) **हमने तुम को बहुत सी महनतों में डाला** (ताकि दर्जे बढ़ें फिर उससे छुटकारा दिया) **फिर** (मदयन पहुंचे और) **मदयन वालों में कई साल रहे फिर एक ख़ास वक़्त पर** (जो मेरे इल्म में तुम्हारी पैग़म्बरी और मुझ से बात करने के लिए नसीब में था) **तुम** (यहां) **आए ऐ मूसा(40) और** (यहां आने पर) **मैंने तुम को अपने** (नबी बनाने के) **लिए चुना(41)** (सो अब) **तुम और तुम्हारे भाई दोनों मेरी निशानियां** (यानी मोजिज़े) **लेकर** (जिस जगह का हुक्म होता है वहां) **जाओ और मेरी यादगारी में** (चाहे तन्हाई में या तबलीग़ के वक़्त) **सुस्ती मत करना(42)** (अब जाने की जगह बताई जाती है कि) **दोनों फ़िरऔन के पास जाओ वो बहुत हद से बढ़ गया है(43) फिर** (उसके पास जाकर) **उससे नर्मी के साथ बात करना शायद वो** (लगाव से) **नसीहत मान ले या** (अल्लाह के अज़ाब से) **डर** (जाए और उससे मान) **जाए(44)।**

नोटः- जब हज़रत मूसा व हारून अलैहिस्सलाम को फ़िरऔन को समझाने के लिए भेजा जाता है तो हुक्म होता है कि उससे नर्मी से बात करना तो मालूम हुआ कि नसीहत के लिए नर्मी का बरताव होना चाहिए।

قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَ اَرٰى ۝ فَاْتِيٰهُ
فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَ لَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَ السَّلٰمُ عَلٰى
مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝ اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَ تَوَلّٰى ۝ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ
رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ۝

आयत न० 45 से 50

(जब यह हुक्म दोनों को पहुंचा तो) **दोनो ने कहा या रब हमारे** (हम तबलीग़ के लिए हाज़िर हैं लेकिन) **हम को ख़तरा है कि** (कहीं) **वो हम को** (तबलीग़ से पहले ही) **न सताने लगे** (कि तबलीग़ ही रह जाए) **या यह कि** (ऐन तबलीग़ के वक़्त अपने कुफ़्र में) **ज़्यादा शरारत न करने लगे** (कि अपनी बकवास में तबलीग़ न सुने न सुनने दे)**(45) कहा** (अल्लाह तआला ने) **कि** (इस बात से बिल्कुल) **न डरो** (क्योंकि) **मैं तुम दोनों के साथ हूं सब सुनता देखता हूं** (मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करूंगा और उस पर तुम्हारा रौब छा जाएगा)**(46) तो तुम** (निडर होकर) **उस के पास जाओ और** (उससे) **कहो कि हम दोनों तुम्हारे रब के पैग़म्बर हैं सो** (तुम हमारा कहना मानो और ज़ुल्म से बाज़ आओ और) **बनी इस्राईल को** (जिन पर तुम नाहक़ ज़ुल्म करते हो उन को आज़ाद करके) **हमारे साथ जाने दो** (कि जहां चाहें और जिस तरह चाहें रहें) **और उन को तकलीफ़ें मत पहुंचाओ,** (और) **हम** (पैग़म्बरी का दावा वैसे ही नहीं करते बल्कि हम) **तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से** (अपनी पैग़म्बरी की) **निशानी** (यानी मोजिज़ा भी) **लाएं हैं, और ऐसे आदमी के लिए** (अल्लाह के अज़ाब से) **सलामती है जो** (सीधे) **रास्ते पर चले(47)** (और) **हमारे पास यह हुक्म पहुंचा है कि** (अल्लाह का) **अज़ाब उस आदमी पर होगा जो** (हक़ को) **झुटलाए और** (उससे) **मुंह फेरे(48)** (बस दोनो गये और ये बातें सुनने के बाद) **वो कहने लगा कि फिर** (यह तो बताओ कि) **तुम दोनो का रब कौन है** (जिस के तुम अपने को पैग़म्बर बताते हो) **ऐ मूसा(49)** (जवाब में) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि हमारा** (दोनों का बल्कि सब का) **रब वो है जिसने हर चीज़ को बनावट दी जो उसके लिए ठीक थी फिर** (उनमें जो जानदार हैं उनको उनके नफ़े की चीज़ो की तरफ़) **राह दिखाई** (जैसा कि हर जानवर अपनी सही ख़ुराक और जोड़ा और घर ढूंड लेता है बस वो ही हमारा भी रब है)**(50)।**

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿۵۱﴾ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ فِیْ كِتٰبٍ ۚ لَا یَضِلُّ رَبِّیْ وَ لَا یَنْسَى ﴿۵۲﴾ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ
الْاَرْضَ مَهْدًا وَّ سَلَكَ لَكُمْ فِیْهَا سُبُلًا وَّ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿۵۳﴾ كُلُوْا وَ
ارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی النُّهٰى ﴿۵۴﴾ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَ فِیْهَا نُعِیْدُكُمْ وَ مِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً
اُخْرٰى ﴿۵۵﴾ وَ لَقَدْ اَرَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَ اَبٰى ﴿۵۶﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ یٰمُوْسٰى ﴿۵۷﴾
فَلَنَاْتِیَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَیْنَنَا وَ بَیْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَ لَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿۵۸﴾ قَالَ

مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

आयत न० 51 से 59

फ़िरऔन ने (पहली उम्मतों के बारे में सवाल किया और) **कहा अच्छा तो पहले लोगों का क्या अन्जाम हुआ** (जो पैग़म्बरों को झुटलाया करते थे उन पर कौन सा अज़ाब आया)(51) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा** (कि मैंने यह दावा नहीं किया कि वो आने वाला अज़ाब दुनिया ही में आना ज़रूरी है बल्कि कभी दुनिया में भी आजाता है और आख़रत में ज़रूर ही होगा बस) **उन लोगों** (के बुरे कामों) **की जानकारी मेरे रब के पास लिखी हुई है** (और) **मेरा रब** (ऐसा जानने वाला है कि) **न ग़लती करता है और न भूलता है** (बस अज़ाब का एक वक़्त तय है जब वो आएगा उन को अज़ाब दे दिया जाएगा)(52) **वो** (रब) **ऐसा है जिस ने तुम लोगों के लिए ज़मीन को फ़र्श** (जैसा) **बना दिया** (कि उस पर आराम करते हो) **और उस** (ज़मीन) **में तुम्हारे** (चलने के) **लिए रास्ते बनाए और आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उस** (पानी) **के वास्ते से बहुत से पेड़ पौधे पैदा किये**(53) (और तुम को इजाज़त दी कि) **ख़ुद** (भी) **खाओ और अपने जानवरों को** (भी) **चराओ, इन सब चीज़ों में समझदारों के लिए** (अल्लाह तआला की क़ुदरत) **निशानियां हैं**(54) (और जिस तरह पेड़ पौधों को ज़मीन से निकालते हैं इसी तरह) **हम ने तुम को** (शुरू में) **इसी ज़मीन से पैदा किया** (जैसा कि आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से बनाए गये जो सब के बाप हैं) **और उसी में हम तुम को** (मौत के बाद) **ले जाएंगे** (बस कोई मुर्दा किसी हालत में हो लेकिन आख़ीर में चाहे बहुत दिनों बाद सही मगर मिट्टी में ज़रूर मिलेगा) **और** (क़ियामत के दिन) **फिर दोबारा उसी से हम तुम को निकालेंगे** (जैसा पहली बार इससे पैदा कर चुके हैं)(55) **और हमने उस** (फ़िरऔन) **को अपनी** (वो) **सब ही निशानियां दिखाईं** (जो मूसा अलैहिस्सलाम को दी हुई थी) **फिर भी वो झुटलाता ही रहा और इनकार ही करता रहा**(56) (और) **कहने लगा कि ऐ मूसा तुम हमारे पास** (यह दावा लेकर) **इसलिए आए हों**(गे) **हम को हमारे मुल्क से अपने जादू** (के ज़ोर) **से निकाल बाहर कर दो** (और लोगों को अपना दीवाना और ताबेदार बनाकर हाकिम बन जाओ)(57) **सो अब हम भी तुम्हारे मुक़ाबिले में ऐसा ही जादू लाते हैं तो हमारे और अपने बीच में** (एक साफ़) **खुले मैदान में** (मुक़ाबिले का) **एक वक़्त तय कर लो** (ताकि सब देखलें और) **जिससे न हम हटें न तुम हटो**(58) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा तुम्हारे** (मुक़ाबिले के) **वादे का वक़्त वो दिन है जिस में** (तुम्हारा) **मेला होता है और** (जिसमें) **दिन चढ़े लोग जमा हो जाते हैं** (और मेले की जगह

खुला मैदान ही होता है)(59)।

नोटः- फिरऔन ने गुज़रे हुए गुमराह लोगों के अन्जाम के बारे में सवाल करके मूसा अलैहिस्सलाम को उलझाना चाहा ताकि अपने बड़ों के अन्जाम को सुनकर लोग मूसा अलैहिस्सलाम से बदगुमान हो जाएं मगर आप ने उसका हकीमाना जवाब दिया कि मेरे रब को मालूम है कि उनका क्या अन्जाम होगा। तो तबलीग़ करने वालों को हिकमत से काम लेना चाहिए फ़ज़ूल बहसों से बचना चाहिए।

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿۶۰﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ
بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿۶۱﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَ اَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿۶۲﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ
يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿۶۳﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا
صَفًّا ۚ وَ قَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿۶۴﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَ اِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿۶۵﴾ قَالَ
بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَ عِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿۶۶﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً
مُّوْسٰى ﴿۶۷﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿۶۸﴾ وَ اَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ؕ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ؕ
وَ لَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿۶۹﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَ مُوْسٰى ﴿۷۰﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ
اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ؕ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ
فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَ لَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّ اَبْقٰى ﴿۷۱﴾ قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ
الَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۷۲﴾ؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَ
مَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿۷۳﴾ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ
فِيْهَا وَ لَا يَحْيٰى ﴿۷۴﴾ وَ مَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿۷۵﴾ۙ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿۷۶﴾ؑ

आयत न० 60 से 76

बस (यह सुनकर) **फ़िरऔन** (दरबार से अपनी जगह) **लौट गया फिर अपने दांव का** (यानी जादू का) **सामान जमा करना शुरू किया फिर** (सब को लेकर उस मैदान में जहां वादा ठहरा था मुक़ाबिले के लिए) **आया(60)** (उस वक़्त) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने उन** (जादूगर) **लोगों से** (नसीहत करते हुए) **कहा कि अफ़सोस है तुम पर अल्लाह पर झूट मत बान्धो** (कि उसके वजूद या एक होने का इनकार करने लगो या उसके मोजिज़ों को जादू बताने लगो) **कभी अल्लाह तआ़ला तुम को किसी क़िस्म की सज़ा से बिल्कुल ही मिटा दे और जो झूट बान्धता है वो** (आख़िर को) **नाकाम रहता है(61) बस जादूगर** (यह बात सुनकर मूसा व हारून अलैहिस्सलाम के बारे में) **आपस में बहस करने लगे और चुपके चुपके बात करते रहे(62)** (आख़िर सब एक राय होकर) **कहने लगे कि बेशक ये दोनों जादूगर हैं इनका मतलब यह है कि अपने जादू** (के ज़ोर) **से तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे अच्छे** (मज़हबी) **तरीक़े का ख़ातमा कर दें(63) तो अब तुम मिल कर अपना दांव पक्का कर लो और सफ़ें बान्ध कर** (मुक़ाबिले में) **आओ और आज वो ही कामयाब है जो जीत जाएगा(64)** (फिर) **उन्होंने** (मूसा अलैहिस्सलाम से) **कहा कि ऐ मूसा** (कहिए) **आप** (अपना असा) **पहले डालेंगे या हम डालने में पहल करें(65) आप ने** (बहुत बेपरवाई से) **कहा नहीं तुम ही पहले डालो** (बस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और नज़रबन्दी कर दी) **बस अचानक उन की रस्सियां और लाठियां उनकी नज़र बन्दी से मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की नज़र में ऐसी लगने लगीं जैसे** (सांप की तरह) **चलती दौड़ती हों(66) इस पर मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को दिल में थोड़ा सा डर सा लगा** (कि जब देखने में ये रस्सियां और लाठियां भी सांप लगती हैं और मेरा असा भी बहुत से बहुत सांप बन जाएगा तो देखने वाले तो दोनों चीज़ों को एक ही सा समझेंगे तो सच व झूट में किस तरह फ़र्क़ करेंगे)(67) **हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही जीतोगे(68) और** (उस की सूरत यह है कि) **यह तुम्हारे दाहिने हाथ में जो** (असा) **है उस को** (ज़मीन पर) **डाल दो उन लोगों ने जो कुछ** (सांग) **बनाया है यह** (असा) **सब को निगल जाएगा, यह जो कुछ बनाया है जादूगरों का सांग है, और जादूगर कहीं चला जाए** (मोजिज़े के मुक़ाबिले में कभी) **कामयाब नहीं होता(69)** (मूसा अलैहिस्सलाम को तसल्ली हो गई बस उन्होंने असा डाला और वो सचमुच सब को निगल गया) **सो जादूगर** (यह जादू से ऊपर की चीज़ देख कर समझ गये कि यह बेशक मोजिज़ा है और उसी वक़्त सब) **सजदे में गिर गये** (और ऊंची आवाज़ में) **कहा कि हम तो ईमान ले आए हारून और मूसा** (अलैहिमुस्सलाम) **के रब पर(70)**

फ़िरऔन ने (यह क़िस्सा देख कर जादूगरों को धमकाया और) **कहा कि मेरी इजाज़त से पहले तुम मूसा** (अलैहिस्सलाम) **पर ईमान ले आए, सचमुच** (ऐसा लगता है कि) **वो** (जादू में) **तुम्हारे सरदार** (और उस्ताद) **हैं कि उन्होंने तुम को जादू सिखाया है** (और उस्ताद चेलों ने यह चाल चली है ताकि तुम को हुकूमत मिल जाए), **सो** (अब असलीयत पता चल जाएगी) **मैं तुम सब के हाथ पैर कटवाता हूं एक तरफ़ का हाथ और एक तरफ़ का पैर और तुम सब को खजूरों के पेड़ पर फांसी देता हूं** (ताकि सब देख कर सबक़ लें) **और यह भी तुम को पता चल जाएगा कि हम दोनों में** (यानी मुझ में और मूसा के रब में) **किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और देरपा है(71) उन लोगों ने साफ़ जवाब दे दिया कि हम तुम को कभी ज़्यादा न समझेंगे उन दलीलों के मुक़ाबिले में जो हम को मिली हैं और मुक़ाबिले में उस हस्ती के जिसने हम को पैदा किया है तुम को जो कुछ करना हो** (दिल खोल कर) **कर लो, तुम सिवाए इसके कि दुनिया की ज़िन्दगी में कुछ कर लो और कर ही क्या सकते हो(72) बस हम तो अपने रब पर ईमान ला चुके ताकि वो हमारे** (पिछले) **गुनाह** (जैसे कुफ़्र) **मुआफ़ कर दे और जादू के उस काम को भी** (मुआफ़ कर दे) **जिस** (के बारे) **में तुम ने हमें मजबूर किया है, और अल्लाह तआ़ला** (ख़ूबियों में भी तुम से) **बहुत अच्छे हैं और सदा बाक़ी रहने वाले** (हैं और न तुम्हारी सज़ा सदा रहने वाली है और न इनआम बाक़ी रहने वाले) **हैं(73)** (और) **जो आदमी** (बग़ावत का) **मुजरिम** (यानी काफ़िर) **होकर अपने रब के पास आएगा सो उसके लिए दोज़ख़** (तय) **है, उसमें न मौत आएगी और न** (चैन आराम की) **ज़िन्दगी होगी(74) और जो आदमी उस के पास मोमिन बन कर आएगा** (और) **जिसने नेक काम भी किये हों सो ऐसों के लिए बड़े ऊंचे दर्जे हैं(75) यानी सदा रहने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वो उनमें सदा-सदा रहेंगे, और जो आदमी** (कुफ़्र व गुनाहों से) **पाक हो उसका ये ही इनआम है** (बस इसलिए हम कुफ़्र को छोड़ कर ईमान ले आए)(76)।

नोटः- कुदरत का करिशमा देखिए जो लोग शुरू दिन में काफ़िर और जादूगर थे वो आख़ीर दिन में अल्लाह के वली और शहीद।

और फ़िरऔन की बीवी आसिया ने भी अपने ईमान का ऐलान कर दिया जिस पर गुस्सा होकर फ़िरऔन ने उन्हें शहीद करा दिया।

وَ لَقَدۡ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى مُوۡسٰٓى ۙ اَنۡ اَسۡرِ بِعِبَادِىۡ فَاضۡرِبۡ لَهُمۡ طَرِيۡقًا فِى الۡبَحۡرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّ لَا
تَخۡشٰى ﴿۷۷﴾ فَاَتۡبَعَهُمۡ فِرۡعَوۡنُ بِجُنُوۡدِهٖ فَغَشِيَهُمۡ مِّنَ الۡيَمِّ مَا غَشِيَهُمۡ ﴿۷۸﴾ وَ اَضَلَّ فِرۡعَوۡنُ قَوۡمَهٗ وَ مَا
هَدٰى ﴿۷۹﴾ يٰبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ قَدۡ اَنۡجَيۡنٰكُمۡ مِّنۡ عَدُوِّكُمۡ وَ وٰعَدۡنٰكُمۡ جَانِبَ الطُّوۡرِ الۡاَيۡمَنَ وَ نَزَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ
وَ السَّلۡوٰى ﴿۸۰﴾ كُلُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ وَ لَا تَطۡغَوۡا فِيۡهِ فَيَحِلَّ عَلَيۡكُمۡ غَضَبِىۡ ۚ وَ مَنۡ يَّحۡلِلۡ عَلَيۡهِ غَضَبِىۡ
فَقَدۡ هَوٰى ﴿۸۱﴾ وَ اِنِّىۡ لَغَفَّارٌ لِّمَنۡ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهۡتَدٰى ﴿۸۲﴾

आयत न० 77 से 82

और (जब फ़िरऔन इस पर भी ईमान न लाया और बनी इस्राईल को सताता रहा उस वक़्त) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के पास वही भेजी कि हमारे** (इन) **बन्दों को** (यानी बनी इस्राईल को मिस्र से) **रातों रात** (बाहर) **ले जाओ** (और दूर चले जाओ ताकि फ़िरऔन के ज़ुल्मो सितम से इनको छुटकारा मिले) **फिर** (रास्ते में जो दरिया मिलेगा तो) **उनके लिए दरिया में** (असा मार कर) **सूखा रास्ता बना देना** (यानी असा मारना कि सूखा रास्ता बन जाएगा) **न तो तुम को किसी के पीछा करने का ख़तरा होगा** (क्योंकि पीछा करने वाले कामयाब न होंगे चाहे पीछा करें) **और न किसी तरह का** (जैसे डूबने का) **डर होगा** (बल्कि अमन व तसल्ली से पार हो जाओगे, बस मूसा अलैहिस्सलाम हुक्म के मुवाफ़िक़ उनको रातों रात निकाल ले गये और सुबह मिस्र में ख़बर मशहूर हुई)(77) **बस फ़िरऔन अपनी फ़ौजों को लेकर उनके पीछे चला** (और बनी इस्राईल अल्लाह के वादे के हिसाब से दरिया से पार हो गये और वो दरिया में बने हुए रास्ते उसी तरह थे फ़िरऔन के लोगों ने जल्दी में कुछ अन्जाम सोचा नहीं उन रास्तों पर चल दिये जब अन्दर आगये) **तो** (उस वक़्त चारों तरफ़ से) **दरिया** (का पानी सिमट कर) **उन पर जैसा मिलने को था आ मिला** (और सब डूब गये)(78) **और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को बुरे रास्ते पर लगाया और सही रास्ता उन को न बताया**(79) **ऐ बनी इस्राईल** (देखो) **हम ने** (तुम को कैसी-कैसी नेमते दीं कि) **तुम को तुम्हारे** (ऐसे बड़े) **दुशमन से बचाया और हमने तुम से** (यानी तुम्हारे पैग़म्बर से तुम्हारे नफ़े के वास्ते) **तूर पहाड़ के दाहिनी तरफ़ आने का** (और वहां आने के बाद तौरेत देने का) **वादा किया और** (तिया की घाटी में) **हमने तुम पर** (खाने के लिए) **मन्ना व सलवा उतारा**(80) (और इजाज़त दी कि) **हम ने जो अच्छी चीज़ें** (कि शरीअत से भी हलाल हैं और मज़ेदार भी हैं) **तुम को दी हैं**

उन को खाओ और इस (खाने) **में** (शरीअत की) **हद से न बढ़ो** (जैसे हराम तरीक़े से कमाएं या खाकर गुनाह करें) **कहीं मेरा गुस्सा न तुम पर पड़ जाए और जिस आदमी पर मेरा गुस्सा पड़ता है वो बिल्कुल बर्बाद हो जाता है(81) और** (इसके साथ यह भी है कि) **मैं ऐसे लोगों के लिए बड़ा मुआफ़ करने वाला भी हूं जो** (कुफ़्र व गुनाह से) **तौबा करलें और ईमान ले आएं और नेक काम करें फिर** (उसी) **रास्ते पर जमे** (भी) **रहें(82)।**

नोटः- हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में जब बनी इस्राईल मिस्र में आए तो बारह भाई थे और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ जब मिस्र से बाहर निकले तो उनकी गिनती 6 लाख से ज़्यादा बताई जाती है यह भी अल्लाह की कुदरत का बड़ा करिशमा था।

وَمَآ اَعۡجَلَكَ عَنۡ قَوۡمِكَ يٰمُوۡسٰى ﴿۸۳﴾ قَالَ هُمۡ اُولَاۤءِ عَلٰٓى اَثَرِىۡ وَعَجِلۡتُ اِلَيۡكَ رَبِّ لِتَرۡضٰى ﴿۸۴﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدۡ
فَتَنَّا قَوۡمَكَ مِنۡۢ بَعۡدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ ﴿۸۵﴾ فَرَجَعَ مُوۡسٰٓى اِلٰى قَوۡمِهٖ غَضۡبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوۡمِ
اَلَمۡ يَعِدۡكُمۡ رَبُّكُمۡ وَعۡدًا حَسَنًا ۙ اَفَطَالَ عَلَيۡكُمُ الۡعَهۡدُ اَمۡ اَرَدۡتُّمۡ اَنۡ يَّحِلَّ عَلَيۡكُمۡ غَضَبٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ
فَاَخۡلَفۡتُمۡ مَّوۡعِدِىۡ ﴿۸۶﴾ قَالُوۡا مَآ اَخۡلَفۡنَا مَوۡعِدَكَ بِمَلۡكِنَا وَلٰـكِنَّا حُمِّلۡنَاۤ اَوۡزَارًا مِّنۡ زِيۡنَةِ الۡقَوۡمِ
فَقَذَفۡنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلۡقَى السَّامِرِىُّ ۙ ﴿۸۷﴾ فَاَخۡرَجَ لَهُمۡ عِجۡلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوۡا هٰذَاۤ اِلٰهُكُمۡ وَاِلٰهُ
مُوۡسٰى ۙ فَنَسِىَ ؕ ﴿۸۸﴾ اَفَلَا يَرَوۡنَ اَلَّا يَرۡجِعُ اِلَيۡهِمۡ قَوۡلًا ۙ وَّلَا يَمۡلِكُ لَهُمۡ ضَرًّا وَّلَا نَفۡعًا ﴿۸۹﴾

आयत न० 83 से 89

और (जब अल्लाह तआ़ला ने तौरेत देने के लिए मूसा अलैहिस्सलाम को कुछ साथियों के साथ तूर पहाड़ पर आने का हुक्म दिया तो मूसा अलैहिस्सलाम शौक़ में सबसे आगे अकेले जा पहुंचे और दूसरे लोग अपनी जगह रह गये तूर पर जाने का इरादा ही नहीं किया अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा) **ऐ मूसा आप अपनी क़ौम से आगे जल्दी क्यों चले आए(83) उन्होंने** (अपने अन्दाज़े से) **कहा कि वो लोग तो यहीं हैं मेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं और मैं** (सब से पहले) **आप के पास** (यानी उस जगह जहां बात करने का आपने वादा किया) **जल्दी से इसलिए चला आया कि आप** (ज़्यादा) **खुश होंगे** (क्योंकि हुक्म मानने में जल्दी करना ज़्यादा खुशी की बात है)(84) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **कि तुम्हारी क़ौम को तो हमने तुम्हारे** (चले आने के) **बाद एक**

फ़ितने में डाल दिया और उन को सामरी (नाम के एक आदमी) **ने गुमराह कर दिया(85) बस मूसा** (अलैहिस्सलाम वक़्त पूरा होने के बाद) **गुस्से और ग़म में भरे हुए अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आए** (और) **कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम क्या तुम से तुम्हारे रब ने एक अच्छा** (और सच्चा) **वादा नहीं किया** (था कि हम तुम को एक किताब हुक्मों की देंगे तो उस किताब का तो तुम को इन्तिज़ार ज़रूरी) **था, क्या तुम पर** (तय वक़्त से बहुत) **ज़्यादा दिन बीत गये थे** (कि उस किताब के मिलने से नाउम्मीदी हो गई इसलिए अपनी तरफ़ से एक इबादत घड़ ली) **या तुम यह चाहते थे कि तुम्हारे रब का गुस्सा तुम पर उतर आए इसलिए तुम ने मुझ से जो वादा किया था** (कि आप की वापसी तक कोई नया काम न करेंगे और आप के वज़ीर हारून अलैहिस्सलाम का कहना मानेंगे) **उसके ख़िलाफ़** (क्यों) **किया(86) वो कहने लगे कि हमने जो आप से वादा किया था उस को अपनी मर्ज़ी से ख़िलाफ़ नहीं किया** (यह मतलब नहीं कि किसी ने ज़बरदस्ती उनसे यह काम करा लिया बल्कि सामरी की वजह से शक में पड़ गये) **और लेकिन** (फ़िरऔनी) **क़ौम के ज़ेवर** (जो मिस्र से आने से पहले उन से उधार मांग लिये थे उन) **में से हम पर बोझ लद रहा था सो हमने उसको** (सामरी के कहने से आग में) **डाल दिया फिर उसी तरह सामरी ने** (भी अपने हाथ से कुछ) **डाल दिया(87)** (आगे अल्लाह तआ़ला क़िस्सा इस तरह पूरा करते हैं कि) **फिर उस** (सामरी) **ने उन लोगों के लिए एक बछड़ा** (बनाकर) **निकाल लिया कि वो एक जिस्म था जिसमें** (से) **एक** (ऐसी) **आवाज़** (निकल रही) **थी** (जिस का कुछ मतलब नहीं) **फिर** (उसके बारे में वो बेवक़ूफ़) **लोग** (एक दूसरे से) **कहने लगे कि तुम्हारा और मूसा का** (भी) **माबूद तो यह है** (इसकी इबादत करो) **मूसा तो** (वहां जाकर रास्ता) **भूल गये हैं(88)** (अल्लाह तआ़ला उनकी बेवक़ूफ़ी पर कहते हैं कि) **क्या वो लोग इतना भी नहीं देखते थे कि वो** (ख़ुद या किसी वास्ते से) **न तो उन की किसी बात का जवाब दे सकता है और न उनको कोई नुक़सान या नफ़ा पहुंचा सकता** (है ऐसा बेकार ख़ुदा क्या होगा और सच्चा ख़ुदा पैग़म्बरों के वास्ते से बात ज़रूर करता) **है(89)।**

नोटः- सामरी ने जो बछड़ा बनाया था वो एक जिस्म था जिसमें जान नहीं थी और उसमें से एक बेतुकी आवाज़ निकलती थी कि हवा पीछे से दाख़िल होकर आगे से आवाज़ के साथ निकल जाती थी।

وَ لَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِیْ وَ اَطِیْعُوْۤا اَمْرِیْ ﴿۹۰﴾
قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَیْهِ عٰكِفِیْنَ حَتّٰی یَرْجِعَ اِلَیْنَا مُوْسٰی ﴿۹۱﴾ قَالَ یٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَیْتَهُمْ ضَلُّوْۤا ﴿۹۲﴾ اَلَّا
تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَیْتَ اَمْرِیْ ﴿۹۳﴾ قَالَ یَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْیَتِیْ وَ لَا بِرَاْسِیْ ۚ اِنِّیْ خَشِیْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَیْنَ
بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ وَ لَمْ تَرْقُبْ قَوْلِیْ ﴿۹۴﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ یٰسَامِرِیُّ ﴿۹۵﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ یَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ
قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَ كَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِیْ نَفْسِیْ ﴿۹۶﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِی الْحَیٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ
لَا مِسَاسَ ۪ وَ اِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰۤی اِلٰهِكَ الَّذِیْ ظَلْتَ عَلَیْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ
لَنَنْسِفَنَّهٗ فِی الْیَمِّ نَسْفًا ﴿۹۷﴾ اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿۹۸﴾

आयत न० 90 से 98

और उन लोगों से हारून (अलैहिस्सलाम) **ने** (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लौटने से) **पहले भी कहा था कि ऐ मेरी क़ौम तुम इस** (बछड़े) **की वजह से गुमराही में फंस गये हो** (यानी इसकी पूजा किसी तरह ठीक नहीं हो सकती यह खुली गुमराही है), **और तुम्हारा** (सच्चा) **रब अल्लाह है** (न कि यह बछड़ा) **तो तुम** (दीन के बारे में) **मेरे रास्ते पर चलो और** (इस बारे में) **मेरा कहना मानो(90) उन्होंने जवाब दिया कि जब तक मूसा** (अलैहिस्सलाम) **वापस** (होकर) **आएं हम तो उसी** (की इबादत) **पर जमे रहेंगे(91)** (उन लोगों ने हारून अलैहिस्सलाम का कहना नहीं माना था यहां तक कि मूसा अलैहिस्सलाम भी आ गये और क़ौम से पहले बात की जो ऊपर आ गई है उसके बाद हारून अलैहिस्सलाम की तरफ़ ध्यान किया और) **कहा ऐ हारून जब तुम ने** (उन को) **देखा था कि ये** (बिल्कुल) **गुमराह हो गये** (और नसीहत भी नहीं सुनी) **तो** (उस वक़्त) **तुम को किस बात ने रोका था(92) कि तुम मेरे पास चले आते** (यानी उस वक़्त तुम को मेरे पास आना चाहिए था ताकि उन लोगों को और ज़्यादा यक़ीन होता कि तुम उनके काम को बहुत नापसन्द करते हो और ऐसे बाग़ियों से बिल्कुल वास्ता न रखना ज़्यादा अच्छा है), **सो क्या तुम ने मेरे कहने के ख़िलाफ़ किया(93) हारून** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि ऐ मेरी मां के बेटे** (यानी मेरे भाई) **तुम मेरी डाढ़ी मत पकड़ो और न सर** (के बाल) **पकड़ो** (और मेरी मजबूरी सुन लो मेरे तुम्हारे पास न आने की यह वजह थी कि) **मुझ को यह ख़तरा हो गया कि** (अगर मैं आप की तरफ़ चला तो मेरे साथ वो लोग भी चलेंगे जो बछड़े की पूजा से अलग रहे तो बनी इस्राईल क़ौम के दो टुकड़े हो जाएंगे क्योंकि

बछड़े की पूजा को बुरा समझने वाले मेरे साथ होंगे और दूसरे लोग उस की इबादत पर ही जमे रहेंगे और इस हालत में) **तुम कहने लगो कि तुम ने बनी इस्राईल के बीच फूट डाल दी** (जो कभी-कभी उन के साथ रहने से ज़्यादा नुक़सान की बात होती है कि फ़साद करने वाले ख़ाली मैदान पाकर बेखटक फ़साद में तरक़्क़ी करते हैं) **और** (यह कहने लगो कि) **तुमने मेरी बात का ध्यान न** (किया कि मैंने कहा था तुम्हें सुधार करने को तुमने बनी इस्राईल में फूट डाल कर फ़साद खड़ा कर दिया यह क्या) **किया(94)** (फिर सामरी की तरफ़ ध्यान किया और उससे) **कहा कि ऐ सामरी तुझे क्या हुआ था** (यानी तूने यह हरकत क्यों की)(95) **उसने कहा कि मुझ को ऐसी चीज़ दिखाई दी जो दूसरों को दिखाई न दी थी** (यानी किसी दिन जिब्रील अलैहिस्सलाम को घोड़े पर सवार मूसा अलैहिस्सलाम के पास देखा था) **फिर मैंने उस** (अल्लाह के) **भेजे हुए** (की सवारी) **के पैर के नीचे से एक मुट्ठी** (भर कर मिट्टी) **उठा ली थी** (और मेरे जी में यह बात आई कि इसमें ज़िन्दगी का असर होगा जिस चीज़ पर डाली जाएगी उसमें ज़िन्दगी पैदा हो जाएगी) **सो मैंने वो मुट्ठी** (मिट्टी इस बछड़े के जिस्म के अन्दर) **डाल दी और मेरे जी को ये ही बात पसन्द आई(96) आप ने कहा तो बस तेरे लिए इस** (दुनिया की) **ज़िन्दगी में यह सज़ा** (रक्खी गई) **है कि तू यह कहता फिरेगा कि मुझ को कोई हाथ न लगाना और तेरे लिए** (इस सज़ा के अलावा) **एक और वादा** (अल्लाह तआला के अज़ाब का) **है जो तुझ से टलने वाला नहीं** (यानी आख़िरत में अलग अज़ाब होगा), **और तू अपने इस** (झूटे) **माबूद को देख जिस** (की इबादत) **पर तू जमा हुआ बैठा था,** (देख) **हम उस को जला देंगे फिर उस** (की राख) **को दरिया में बखेर कर बहा देंगे** (ताकि उस का नामो निशान न रहे)(97) **बस तुम्हारा** (सच्चा) **माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है जिस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, उस का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है(98)।**

नोटः- हज़रत मूसा व हारून अलैहिमुस्सलाम का एक मुआमले में अलग अलग राय होना इससे मालूम हुआ कि उम्मत के आलिमों में एक मसअले में अलग-अलग राय हो सकती है जब कि दोनों का मक़सद दीने हक़ होता है इसलिए उनमें से किसी को नाहक़ पर नहीं कहा जा सकता।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۖۚ ﴿٩٩﴾ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۙ ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ؕ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۙ ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ
اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا
صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّ لَاۤ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَ خَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ
لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ رَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا
بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ لَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَ عَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ؕ وَ قَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ
ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّ لَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا
عَرَبِيًّا وَّ صَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَ لَا
تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَ قُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾

आयत न० 99 से 114

(जिस तरह हमने मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान किया) **इसी तरह हम आप से और पहले क़िस्सों की ख़बर भी बयान करते हैं** (ताकि पैग़म्बरी के सबूत बढ़ते चले जाएं) **और हमने आप को अपने पास से एक नसीहत नामा** (यानी क़ुरआन) **दिया** (है जो पैग़म्बरी की दलील) **है(99) और जो लोग इस** (क़ुरआन की बातों को मानने) **से मुंह फेरेंगे तो वो क़ियामत के दिन** (अज़ाब का) **बड़ा भारी बोझ उठाए होंगे(100)** (और) **वो उस** (अज़ाब) **मे सदा-सदा रहेंगे, और यह बोझ क़ियामत के दिन उन के लिए बड़ा** (बोझ) **होगा(101) जिस दिन सूर में फूंक मार दी जाएगी** (जिससे मुर्दे ज़िन्दा हो जाएंगे) **और हम उस दिन मुजरिम** (यानी काफ़िर) **लोगों को** (क़ियामत के मैदान में) **इस हालत से जमा करेंगे कि** (बहुत बदसूरत आखों से) **नीले होंगे(102)** (और इतना डरे हुए होंगे कि) **चुपके-चुपके आपस में बातें करते होंगे** (और एक दूसरे से कहते होंगे) **कि तुम लोग** (क़ब्रों में) **सिर्फ़ दस दिन रहे** (होंगे जब कि समझते यह थे कि मरकर ज़िन्दा नहीं) **होंगे(103)** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **जिस** (ज़माने) **के बारे में वो बातचीत करेंगे उस को हम अच्छी तरह जानते हैं** (कि वो कितने दिन हैं) **जब कि उन सब में का ज़्यादा जानने वाला यह कहता होगा कि नहीं तुम तो एक ही दिन** (क़ब्र में) **रहे हो(104) और** (ऐ पैग़म्बर कुछ) **लोग आप से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं** (कि क़ियामत में उन का क्या हाल होगा) **तो आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि मेरा रब उन को** (चूरा-चूरा करके धूल की तरह) **उड़ा देगा(105) फिर**

ज़मीन को एक साफ़ (पलेन) **मैदान कर देगा**(106) **जिसमें तुम न कोई मोड़ देखोगे और न कोई ऊंचाई** (जैसे पहाड़ टीले की) **देखोगे**(107) **उस दिन सब के सब** (अल्लाह के) **बुलाने वाले** (यानी सूर फूंकने वाले फ़रिशते) **के कहने पर चले आएंगे** (यानी वो अपनी सूर फूंकने की आवाज़ से सब को क़ब्रों से बुलाएगा तो सब निकल पड़ेंगे) **उस के सामने** (किसी की) **कोई ऐंठ मरोड़ न रहेगी** (कि क़ब्र से ज़िन्दा होकर न निकले जैसे दुनिया में पैग़म्बरों के सामने ऐंठ में रहते थे ईमान न लाते थे) **और** (डर के मारे) **सारी आवाज़ें अल्लाह तआ़ला के सामने दब जाएंगी सो तुम्हें सिवाए पैर की आहट के** (कि हश्र के मैदान की तरफ़ चुपके चुपके चल रहे होंगे) **और कुछ** (आवाज़) **सुनाई न देगी** (चाहे इस वजह से कि उस वक़्त बोलते ही न होंगे चाहे दूसरे मौक़े पर धीमे-धीमे बोलें जैसा ऊपर आया है तो थोड़ी दूर वाले भी न सुन सकेंगे)(108) **उस दिन** (किसी को किसी की) **सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसे आदमी को** (पैग़म्बरों व नेक लोगों की सिफ़ारिश नफ़ा देगी) **कि जिस** (की सिफ़ारिश करने) **के वास्ते अल्लाह तआ़ला ने** (सिफ़ारिश करने वालों को) **इजाज़त देदी हो और उस आदमी के वास्ते** (सिफ़ारिश करने वाले का) **बोलना पसन्द कर लिया हो** (यानी मोमिन कि उस की सिफ़ारिश के लिए इजाज़त होगी और काफ़िरों के लिए सिफ़ारिश की किसी को इजाज़त ही न होगी)(109) **वो** (अल्लाह तआ़ला) **उन सब की अगली पिछली बातों को जानता है और उसके इल्म को ये क़ाबू में नहीं ला सकते** (यानी ऐसी तो कोई बात नहीं जो अल्लाह को पता न हो और ऐसी बहुत सी बातें हैं जो अल्लाह को पता हैं और लोगों को पता नहीं और वो ये भी जानता है कि कौन सिफ़ारिश के क़ाबिल है कौन नहीं)(110) **और** (उस दिन) **सभी चेहरे उस ज़िन्दा रहने वाले सदा रहने वाले** (अल्लाह) **के सामने झुके होंगे** (और सब घमन्डियों का घमन्ड जाता रहेगा)**, और ऐसा आदमी तो** (हर तरह) **नाकाम रहेगा जो ज़ुल्म** (यानी शिर्क) **लेकर आया होगा**(111) **और जिसने नेक काम किये होंगे और वो ईमान भी रखता होगा तो उस को** (पूरा सवाब मिलेगा) **न किसी नाइन्साफ़ी का डर होगा और न कमी का** (जैसे कि कोई गुनाह उसके आमाल नामे में ज़्यादा लिख दिया जाए या कोई नेकी कम लिख दी जाए)(112) **और हमने इसी तरह इस** (सारे) **क़ुरआन को अरबी** (ज़बान) **में उतारा है** (कि इसकी बातें साफ़-साफ़ हैं) **और इसमें हमने तरह-तरह से** (क़ियामत व अज़ाब की) **डराने वाली बातें बयान की हैं ताकि वो** (सुनने वाले) **लोग** (इसके वास्ते से) **डर जाएं** (और इस वक़्त ईमान ले आएं) **या यह क़ुरआन उनके लिए कुछ** (तो) **समझ पैदा कर दे** (यानी अगर पूरा असर न हो तो थोड़ा ही हो और इसी तरह थोड़ा-थोड़ा असर होकर किसी वक़्त मुसलमान हो जाएं)(113) **सो अल्लाह तआ़ला जो सच्चा**

बादशाह है ऊंची शान वाला है (कि ऐसा नफ़ा पहुंचाने वाला कलाम उतारा) **और** (जिस तरह क़ुरआन पर अमल करना और नसीहत मानना ज़रूरी है इसी तरह पढ़ने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह ध्यान रक्खें कि) **क़ुरआन** (पढ़ने) **में इससे पहले कि आप पर इस की वही पूरी उतर चुके जल्दी न किया कीजिए** (कि इसमें आप को तकलीफ़ होती है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम से सुनना और उस को पढ़ना साथ-साथ करना पड़ता तो ऐसा न कीजिए और इसका खटका न कीजिए कि शायद याद न रहे याद कराना हमारे ज़िम्मे है), **और आप** (भी याद होने के लिए हम से) **यह दुआ़ किया कीजिलए कि या रब मेरे मेरा इल्म बढ़ा दीजिए** (इसमें इल्म के हासिल होने और याद रहने की सब दुआ़एं आ गईं)(114)।

नोटः- वही उतरने के शुरू दिनों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आयत को हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के साथ-साथ दोहराते रहते ताकि कुछ भूल न जाएं तो अल्लाह तआ़ला ने याद कराने की ज़िम्मेदारी ख़ुद लेकर इस मेहनत से रोक दिया।

وَ لَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَ لَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَ لِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا
تَجُوْعَ فِيْهَا وَ لَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَ اَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَ لَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ
اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَ مُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ طَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا
مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَ عَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَ هَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا
جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَ لَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَ مَنْ
اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّ نَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَ قَدْ
كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَ كَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَ
لَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَ اَبْقٰى ﴿١٢٧﴾

आयत न० 115 से 127

और इससे (बहुत ज़माना) **पहले हम आदम** (अलैहिस्सलाम) **को एक हुक्म दे चुके थे** (जिस

का बयान आगे आता है) **सो उन से भूल** (और बेपरवाई) **हो गई और हम ने** (उस हुक्म की पाबन्दी के बारे में) **उन में इरादे की मज़बूती न पाई**(115) **और** (यह उस वक़्त की बात है) **जब कि हमने फ़रिशतों से कहा कि आदम** (अलैहिस्सलाम) **के सामने** (सलामी) **सजदा करो सब ने सजदा किया सिवाए इबलीस के,** (कि) **उसने इनकार किया**(116) **फिर हम ने** (आदम से) **कहा कि ऐ आदम** (याद रक्खो) **यह बेशक तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का** (इस वजह से) **दुशमन है** (कि तुम्हारे मुआमले में मरदूद हुआ) **सो कहीं** (ऐसा न हो कि) **तुम दोनों को जन्नत से निकलवादे** (यानी उसके कहने से कोई ऐसा काम मत कर बैठना कि जन्नत से बाहर किये जाओ) **फिर** (रोज़ी कमाने की) **मुसीबत में पड़ जाओ**(117) **यहां जन्नत में तो तुम्हारे लिए यह** (आराम) **है कि तुम न कभी भूके रहोगे** (जिससे तकलीफ़ हो या उसके इन्तिज़ाम में देर और परीशानी हो) **और न नंगे होंगे** (कि कपड़ा न मिले या ज़रूरत के इतनी देर बाद मिले कि तकलीफ़ होने लगे)(118) **और न यहां प्यासे होंगे** (कि पानी न मिले या देर होने से तकलीफ़ हो) **और न धूप में तपोगे** (क्योंकि जन्नत में धूप ही नहीं और मकान भी हर तरह बचाव के हैं और अगर जन्नत से निकल कर दुनिया में गये तो इन सारी मुसीबतों का सामान होगा इसलिए इन बातों को ध्यान में रख कर बहुत ही होशियारी से रहना)(119) **फिर उन को शैतान ने बहकाया कहने लगा कि ऐ आदम क्या मैं तुम को सदा ज़िन्दा रहने** (की ख़ूबी) **का पेड़ बता दूं** (कि उस के खाने से सदा ख़ुश और आबाद रहो) **और ऐसी बादशाही जिसमें कभी कमज़ोरी न आए**(120) **सो** (उसके बहकाने से) **दोनो ने उस पेड़ से** (कुछ) **खा लिया** (जिससे मना किया गया था) **तो** (उसके खाते ही) **उन दोनों के पर्दे के बदन एक दूसरे के सामने खुल गये और** (अपना बदन ढांपने को) **दोनों अपने** (बदन के) **ऊपर जन्नत** (के पेड़ों) **के पत्ते चिपकाने लगे, और आदम से अपने रब का क़ुसूर हो गया सो** (जन्नत में सदा रहने का इरादा पूरा करने की वजह से) **ग़लती में पड़ गये**(121) **फिर** (जब उन्होंने ग़लती मान ली तो) **उन के रब ने** (अपनी महरबानी से) **उन्हें चुन लिया सो उन की तौबा क़ुबूल की और सदा** (सीधे) **रास्ते पर रक्खा** (कि फिर ऐसी ग़लती नहीं हुई)(122) **अल्लाह तआला ने कहा कि** (जब उस पेड़ से खालिया तो) **दोनो के दोनो जन्नत से उतरो** (और दुनिया में) **ऐसी हालत से जाओ कि** (तुम्हारी औलाद में) **एक-एक का दुशमन होगा, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत** (का सामान यानी पैग़म्बर या किताब) **पहुंचे तो** (तुम में) **जो आदमी मेरे बताए रास्ते पर चलेगा तो वो न** (दुनिया में) **गुमराह होगा और न** (आख़रत में) **बदनसीब होगा**(123) **और जो आदमी मेरी इस नसीहत से मुंह फेरेगा तो उसके लिए** (क़ियामत से पहले

दुनिया और क़ब्र में) **तंगी का जीना होगा और क़ियामत के दिन हम उसको अन्धा करके** (क़ब्र से) **उठाएंगे**(124) **वो** (हैरानी से) **कहेगा कि या रब मेरे आप ने मुझ को अन्धा करके क्यों उठाया मैं तो** (दुनिया में) **आंखों वाला था** (मुझ से ऐसी क्या ग़लती हुई)(125) **कहा जाएगा कि** (जैसी तुझ को सज़ा हुई है) **ऐसे ही** (तूने काम किये थे वो यह कि) **तेरे पास** (पैग़म्बरों और आलिमों के वास्ते से) **हमारे हुक्म पहुंचे थे फिर तूने उन को भुला दिया और ऐसे ही आज तुझे भुला दिया जाएगा** (यानी आज तेरा कुछ ध्यान न किया जाएगा जैसा तूने ध्यान न किया था)(126) **और** (जिस तरह कि यह सज़ा बुरे कामों के हिसाब से दी गई) **इसी तरह** (हर) **उस आदमी को हम** (उसके काम के हिसाब से) **सज़ा देंगे जो** (ताबेदारी की) **हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और सचमुच आख़रत का अज़ाब बड़ा सख़्त और ज़्यादा देर रहने वाला है** (कि इस की कोई हद ही नहीं तो इससे बचने का बहुत ही ध्यान करना चाहिए)(127)।

नोटः- दुनिया में काफ़िर फ़ाजिर लोग ऐश और ख़ुशहाली में दिखाई देते हैं लेकिन असलीयत यह है कि उनके दिल का चैन सकून छीन लिया जाता है और मोमिनों में जो जिस दर्जे का नेक होता है उतना ही दिल का चैन सकून उस को हासिल होता है। भले ही दुनिया का साज़ो सामान उसके पास कम हो।

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي
النُّهٰى ۧ ﴿۱۲۸﴾ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ اَجَلٌ مُّسَمًّى ؕ ﴿۱۲۹﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ سَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَ مِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَ اَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿۱۳۰﴾ وَ
لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۬ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَ رِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ
وَّ اَبْقٰى ﴿۱۳۱﴾ وَ اْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَ اصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿۱۳۲﴾ وَ
قَالُوْا لَوْ لَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَ لَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿۱۳۳﴾ وَ لَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ
مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْ لَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَ نَخْزٰى ﴿۱۳۴﴾ قُلْ كُلٌّ
مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَ مَنِ اهْتَدٰى ۧ ﴿۱۳۵﴾

आयत न० 128 से 135

(ये ऐतराज़ करने वाले लोग जो कुफ़्र पर जमे हैं तो) **क्या इन लोगों को** (अब तक) **इससे भी हिदायत नहीं हुई कि हम उन से पहले बहुत सी क़ौमों को** (इसी वजह से अज़ाब से) **हलाक कर चुके हैं कि उन** (में से कुछ) **की बस्तियों में ये लोग भी चलते** (फिरते) **हैं** (क्योंकि मुल्क शाम को जाते हुए मक्के वालों के रास्ते में कुछ क़ौमों के मकान आते थे)**, उस** (बात) **में तो समझदारों के** (समझने के) **लिए** (काफ़ी) **सबूत** (कुफ़्र का बुरा अन्जाम होने के) **मौजूद हैं(128) और** (उन पर फ़ौरन अज़ाब न आने से जो उनको शक अपने मज़हब के बुरा न होने का होता है तो उस की असलीयत यह है कि) **अगर आप के रब की तरफ़ से एक बात पहले से कही हुई न होती** (कि कुछ वजहों से इनको मुहलत दी जाएगी) **और** (अज़ाब के लिए) **एक वक़्त तय न होता** (कि वो क़ियामत का दिन है) **तो** (उन के कुफ़्र की वजह से) **अज़ाब ज़रूर होता(129) सो** (जब अज़ाब का आना यक़ीनी है तो) **आप उन की** (कुफ़्र की) **बातों पर सब्र कीजिए** (और उन के कुफ़्र पर जो गुस्सा आता है और अज़ाब में देरी से जो बेचैनी होती है उस को छोड़ दीजिए) **और अपने रब की हम्द** (व सना) **के साथ** (उसकी) **तस्बीह कीजिए** (इसमें नमाज़ भी आ गईं) **सूरज निकलने से पहले** (जैसे फ़ज्र की नमाज़) **और उसके छुपने से पहले** (जैसे जुहर व अस्र की नमाज़) **और रात के वक़्त में** (भी) **किया कीजिए** (जैसे मग़रिब व इशा की नमाज़) **और दिन के शुरू व आख़ीर में** (तस्बीह का ध्यान रखने को दोबारा कहा जाता है) **ताकि** (आप को सवाब मिले और) **आप** (उससे) **ख़ुश हो जाएं** (मतलब यह कि अपना ध्यान आप सच्चे माबूद की तरफ़ रखिये लोगों की फ़िक्र न कीजिए)**(130) और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आंख उठा कर भी न देखिये** (जैसा अब तक भी नहीं देखा) **जो हम ने काफ़िरों के बहुत से लोगों** (जैसे यहूदी व ईसाई और मुशरिक लोगों) **को उन को आज़माने के लिए दे रक्खी हैं कि वो** (सिर्फ़) **दुनिया की ज़िन्दगी की बहार** (है मतलब दूसरों को सुनाना है ताकि जान लें कि जब नबी को भी कहा जा रहा है तो हम को तो ज़्यादा ध्यान रखना चाहिए और आज़माना यह है कि कौन अहसान मानता है और कौन सरकशी करता) **है, और आप के रब का इनआम** (जो आख़रत में मिलेगा इससे) **बहुत अच्छा और देर तक रहने वाला है** (कि कभी ख़त्म ही न होगा)**(131) और अपने लोगों को** (यानी घर वालों और मोमिनों को) **भी नमाज़ का हुक्म करते रहिए और ख़ुद भी उस के पाबन्द रहिए** (यानी ज़्यादा ध्यान देने की ये बातें हैं) **हम आप से और** (इसी तरह दूसरों से ऐसे) **रोज़ी** (कमवाना) **नहीं चाहते** (जो ज़रूरी इबादतों में रूकावट हो)**, रोज़ी तो आप को** (और इसी तरह दूसरों को) **हम देंगे** (यानी असल चीज़

कमाना नहीं बल्कि दीन और ताबेदारी है कमाने की उसी हालत में इजाज़त या हुक्म है कि ज़रूरी ताबेदारी में रूकावट न हो), **और अच्छा अन्जाम तो परहेज़गारी ही का है**(132) **वो लोग** (हटधर्मी से) **यह कहते हैं कि ये पैग़म्बर हमारे पास अपने रब की तरफ़ से कोई निशानी** (अपनी पैग़म्बरी की) **क्यों नहीं लाते,** (आगे जवाब है कि) **क्या उनके पास पहली किताबों की बातें नहीं पहुंची** (मुराद इससे कुरआन है कि इससे पिछली आसमानी किताबों में कही बातें साबित हो गईं मतलब यह कि क्या उन के पास कुरआन नहीं पहुंचा जिसकी पहले से शोहरत थी कि वो पैग़म्बरी पर काफ़ी दलील है)(133) **और अगर हम उनको क़ुरआन आने से पहले** (कुफ़्र की सज़ा में) **किसी अज़ाब से हलाक कर देते** (और फिर क़ियामत के दिन असली सज़ा कुफ़्र की दी जाती कि वो ज़रूरी ही होनी थी) **तो ये लोग** (मजबूरी जताते हुए) **यह कहते कि या रब हमारे आपने हमारे पास कोई पैग़म्बर** (दुनिया में) **क्यों नहीं भेजा था कि हम आप के हुक्मों पर चलते इससे पहले कि हम** (यहां खुद) **ज़लील हों और** (दूसरों की नज़रों में) **रूसवा हों**(134) (अगर वो यह कहें कि वो अज़ाब कब होगा तो) **आप कह दीजिए कि** (हम) **सब इन्तिज़ार कर रहे हैं तो** (कुछ दिन) **और इन्तिज़ार कर लो अब जल्द ही तुम को** (भी) **पता चल जाएगा कि सीधे रास्ते वाले कौन हैं और वो कौन हैं** (जो गुमराही में पड़ गये और वो कौन हैं) **जो हिदायत पा गये हैं** (यानी वो फ़ैसला जल्दी ही मरने के बाद या हश्र के बाद हो जाएगा)(135)।

नोटः- एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "मुझे तुम लोगों के बारे में जिस चीज़ का सबसे ज़्यादा डर और ख़तरा है वो दुनिया की दौलत व रौनक़ है और जो तुम पर खोल दी जाएगी" यानी ऐसा न हो कि दुनिया की रौनक़ों में उलझ कर आख़रत की तैयारी से बेपरवाह हो जाओ। (इब्ने कसीर)